कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 19 जनवरी 2026 वर्ष - 80 अंक - 21 मूल्य - रु. 12/- कुल पृष्ठ -16 www.krishakjagat.org

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

डॉ. जी. एस. कौशल के निधन पर विशेष सामग्री पृष्ठ 8-9 पर देखें

'कृषक कल्याण वर्ष-2026' का शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा

किसानों का करेंगे समग्र कल्याण

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वर्ष 2026 प्रदेश के किसानों के लिए नई उम्मीदों और नए अवसरों का वर्ष होगा। भोपाल के जंबूरी मैदान में आयोजित विशाल किसान सम्मेलन में उन्होंने वर्ष 2026 को आधिकारिक रूप से 'कृषक कल्याण वर्ष' घोषित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान हमारे अन्नदाता हैं और उनकी समृद्धि ही सरकार का सर्वोच्च लक्ष्य है। सरकार खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने के लिए आधुनिक तकनीक, उन्नत बीज, बेहतर सिंचाई, भंडारण और बाजार सुविधा उपलब्ध कराएगी। सम्मेलन में 'विकास पोर्टल' का शुभारंभ किया गया तथा कृषक कल्याण वर्ष की योजनाओं पर आधारित लघु फिल्म भी प्रदर्शित की गई।

किसानों के लिए बड़े संकल्प- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है जिसने पूरा वर्ष किसानों के कल्याण के लिए समर्पित किया है। अगले तीन वर्षों में 30 लाख किसानों को सोलर पंप दिए जाएंगे। सिंचाई क्षमता को 65 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर वर्ष 2028-29 तक 100 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि पार्वती-कालीसिंध-चंबल, केन-बेतवा और ताप्ती ग्राउंड वाटर रिचार्ज परियोजनाओं से 25 जिलों में 16 लाख हेक्टेयर से अधिक भूमि सिंचित होगी।

अनुसंधान, उद्योग और नवाचार पर फोकस- डिंडोरी में श्रीअन्न अनुसंधान केंद्र, ग्वालियर में सरसों और उज्जैन में चना अनुसंधान केंद्र स्थापित किए जाएंगे। कृषि आधारित उद्योगों और फूड प्रोसेसिंग को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी दी जाएगी। सोयाबीन के साथ अब सरसों को भी भावांतर योजना में शामिल किया जाएगा।

किसानों को बेहतर मूल्य और सुरक्षा- मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को शून्य प्रतिशत ब्याज पर ऋण, समय पर फसल बीमा, समर्थन मूल्य और आधुनिक तकनीक से फसल नुकसान का सर्वे सुनिश्चित किया जाएगा। प्राकृतिक और जैविक खेती, माइक्रो इरिगेशन, कृषि अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन और कृषि उत्पादों की ब्रांडिंग पर विशेष जोर रहेगा।

कृषक कल्याण वर्ष का कैलेंडर- वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिनमें कोदो-कुटकी बोनस वितरण, प्राकृतिक खेती संगोष्ठी, आम महोत्सव, एफपीओ कन्वेंशन, फूड फेस्टिवल और गन्ना महोत्सव शामिल हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'किसान की मुस्कान ही मध्यप्रदेश की समृद्धि का आधार है।' सरकार हर कदम पर किसानों के साथ खड़ी है और कृषक कल्याण वर्ष 2026 प्रदेश के कृषि विकास का नया अध्याय लिखेगा।

अब घटिया बीज बेचने वालों को 30 लाख तक जुर्माना, कड़ी सजा : श्री चौहान

कोई भी अनधिकृत विक्रेता बीज नहीं बेच पाएगा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने नए सीड एक्ट (Seed Act 2026) की विशेषताओं और उसके किसानों पर होने वाले प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह विधेयक किसानों की सुरक्षा, बीज की गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने वाला ऐतिहासिक कदम है।

हर बीज की पूरी कहानी किसानों तक

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि अब देश में बीज की ट्रेसिबिलिटी की व्यवस्था स्थापित की जाएगी। उन्होंने बताया, 'हमने कोशिश की है कि ऐसा सिस्टम बने, जिसमें यह पूरा पता चल सके कि बीज कहां उत्पादित हुआ, किस डीलर ने दिया और किसने बेचा।' हर बीज पर QR कोड होगा, जिसे स्कैन करते ही किसान यह जान सकेगा कि वह बीज कहां से आया है। इससे घटिया या नकली बीज न केवल रोके जा सकेंगे बल्कि यदि वे बाजार में आएंगे भी तो जिम्मेदार व्यक्ति पर शीघ्र कार्रवाई संभव होगी।

घटिया बीज सिस्टम में आएंगे ही नहीं

कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने बताया कि जैसे ही ट्रेसिबिलिटी लागू होगी, नकली या खराब बीज की पहचान तुरंत हो जाएगी। उन्होंने कहा, 'खराब बीज आएंगे ही नहीं, और अगर आएंगे तो पकड़े जाएंगे। जिसने खराब बीज दिया, उसे दंड दिया जाएगा।' इससे किसानों को भ्रमित करने वाली कंपनियों और डीलरों की मनमानी पर लगाम लगेगी।

30 लाख तक जुर्माना और सजा

श्री चौहान ने कहा कि बीजों की गुणवत्ता पर अब किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।, 'अभी तक 500 रुपये तक का जुर्माना था, अब प्रस्ताव है कि 30 लाख रुपये तक जुर्माना हो और अगर कोई जानबूझकर अपराध करता है तो सजा का भी प्रावधान है।' उन्होंने कहा कि सब कंपनियां खराब नहीं हैं, लेकिन जो किसान को धोखा देंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

2047 तक सभी देसी पशु नस्लों का 100 फीसदी पंजीकरण लक्ष्य : श्री चौहान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) द्वारा नई दिल्ली में पशु नस्ल पंजीकरण प्रमाणपत्र एवं नस्ल संरक्षण पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि 2047 तक सभी देसी पशु नस्लों का 100 प्रतिशत पंजीकरण करना भाकृअनुप का लक्ष्य है, जो विकसित भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने देसी पशु नस्लों के संरक्षण को पर्यावरण, किसानों की आजीविका और सतत कृषि से जुड़ा बताते हुए इसे जन आंदोलन का स्वरूप देने पर ज़ोर दिया।

देसी पशुधन खेती की अर्थव्यवस्था की रीढ़

केंद्रीय मंत्री ने वर्ष 2019 में शुरू की गई देसी पशु नस्ल संरक्षण की राष्ट्रीय पहल को एक सराहनीय कदम बताते हुए कहा कि देसी मवेशी, भैंस, मुर्गी और छोटे जुगाली करने वाले पशु देश की कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं।

पॉलिसी से आगे बढ़े जन आंदोलन

श्री चौहान ने कहा कि पशु नस्ल संरक्षण का यह मिशन केवल नीति और सम्मेलनों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे गांवों, खेतों और किसान परिवारों तक पहुंचाकर जन आंदोलन बनाना होगा।

242 पशु नस्लें पंजीकृत, लक्ष्य 100 प्रतिशत

इस अवसर पर भाकृअनुप के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट ने कहा कि 'विकसित भारत - पशुधन' का विज़न संरक्षण के साथ-साथ संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग पर केंद्रित है।

उन्होंने बताया कि 2008 से अब तक 242 पशु नस्लों का पंजीकरण किया जा चुका है। 2047 तक सभी देसी पशु नस्लों का शत-प्रतिशत पंजीकरण भाकृअनुप का लक्ष्य है।

नस्ल संरक्षण पुरस्कार वितरित

कार्यक्रम में नई पहचानी गई पशु एवं पोल्ट्री नस्लों को पंजीकरण प्रमाणपत्र प्रदान किए गए तथा वर्ष 2025 के लिए नस्ल संरक्षण पुरस्कार से किसानों, ब्रीडर्स और संस्थानों को सम्मानित किया गया।

सस्टेनेबल पशुधन विकास का संदेश

कार्यक्रम में उप-महानिदेशक (पशुविज्ञान) डॉ. राघवेंद्र भट्टा ने पंजीकृत नस्लों की जानकारी देते हुए उनके संरक्षण को सस्टेनेबल पर्यावरण के लिए आवश्यक बताया।

बजट पूर्व कृषि एवं ग्रामीण विकास से जुड़े सुझावों की रिपोर्ट सौंपी केंद्रीय कृषि मंत्री ने

श्री चौहान ने वित्त मंत्री से की मुलाकात

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह ने दिल्ली में वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण से मुलाकात की। श्री चौहान ने हाल के सप्ताहों में देश के विभिन्न राज्यों का दौरा किया और राज्यों के अलावा दिल्ली में भी प्रगतिशील किसानों, कृषि विशेषज्ञों, स्वयं सहायता समूहों, सहकारी संस्थाओं तथा ग्रामीण उद्योगों एवं दोनों मंत्रालयों से संबंधित राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के वरिष्ठ प्रतिनिधियों से व्यापक संवाद स्थापित किया। इन चर्चाओं से प्राप्त विचारों और सुझावों को एक समग्र कृषि एवं ग्रामीण विकास के सुझाव के रूप में तैयार कर उन्होंने वित्त मंत्री को सौंपा।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने के लिए निरंतर कार्यरत है। श्री चौहान ने कहा कि आगामी आम बजट किसानों और ग्रामीण समाज के लिए प्रेरक होगा। उन्होंने भरोसा व्यक्त किया कि वित्त वर्ष 2026-27 का बजट प्रधानमंत्री के 'समृद्ध किसान, सशक्त गांव' के संकल्प को साकार करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा।

आईसीएआर-एनडीडीबी के बीच समझौता

आईसीएआर ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के साथ एक ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसका उद्देश्य संपूर्ण डेयरी क्षेत्र में बहुविषयक अनुसंधान, नवाचार और क्षमता निर्माण में सहयोग बढ़ाना है। इस समझौता ज्ञापन पर आईसीएआर के उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) डॉ. राघवेंद्र भट्टा और एनडीडीबी के कार्यकारी निदेशक श्री एस. रेगूपथी ने कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डीएआरई) के सचिव और आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट और एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

आईपीएम पर प्रशिक्षण से किसानों तक पहुंचेगी सही तकनीक

नासिक (कृषक जगत)। भारत सरकार के वनस्पति संरक्षण संगरोध एवं संग्रह निदेशालय के उपक्रम केंद्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्र, नासिक द्वारा सब्जी फसलों में 'एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन' (IPM) पर एक महीने का गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के 40 कृषि अधिकारियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण का उद्देश्य- इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कृषि अधिकारियों को आईपीएम की आधुनिक तकनीकों में प्रशिक्षित करना था ताकि वे किसानों को रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कम करने और टिकाऊ सब्जी उत्पादन अपनाने के लिए प्रेरित कर सकें।

समापन समारोह में प्रमुख हस्तियां- समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. सुनीता पांडेय, संयुक्त निदेशक, आईपीएम एवं टिड्डी विभाग, फरीदाबाद ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से राज्य और केंद्र के कृषि अधिकारियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होगा, जिससे किसानों तक सही तकनीक पहुंचाई जा सकेगी। विशिष्ट अतिथि श्री मुकेश महाजन, सहायक निदेशक, रामेती नासिक और डॉ. मनीष मोंढे, उप निदेशक, केंद्रीय आईपीएम केंद्र, नागपुर भी उपस्थित थे।

प्रशिक्षण की मुख्य बातें- इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सब्जी उत्पादन में कीट, रोग और खरपतवार प्रबंधन पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। डॉ. सुनीता पांडेय ने कहा कि इस प्रशिक्षण से किसानों को रासायनिक कीटनाशकों के अवशेष की समस्या से निजात दिलाई जा सकेगी।

एनपीएसएस मोबाइल ऐप- कृषि अधिकारियों को एनपीएसएस मोबाइल ऐप के बारे में भी जानकारी दी गई, जिससे किसान कीट और रोग की पहचान कर तुरंत प्रबंधन सलाह ले सकते हैं। केंद्रीय आईपीएम केंद्र के कार्यालय प्रमुख डॉ. अतुल ठाकरे ने कहा इस प्रशिक्षण से जमीनी स्तर पर टिकाऊ खेती को बढ़ावा मिलेगा।

देश में रबी का रकबा 644 लाख हेक्टेयर से अधिक

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में रबी मौसम 2025-26 की बुवाई अब निर्णायक चरण में पहुँच चुकी है। कृषि मंत्रालय द्वारा 9 जनवरी 2026 तक जारी आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार, देश में कुल रबी फसलों का क्षेत्रफल 644.29 लाख हेक्टेयर तक पहुँच गया है। यह रकबा पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 17.65 लाख हेक्टेयर अधिक है।

गेहूं: रबी सीजन की सबसे अहम फसल गेहूं एक बार फिर मजबूत स्थिति में दिखाई दे रही है। गेहूं की बुवाई 334.17 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 328.04 लाख हेक्टेयर से 6.13 लाख हेक्टेयर अधिक है।

रबी चावल: इस सीजन में रबी चावल की बुवाई 21.71 लाख हेक्टेयर में हुई है, जबकि पिछले वर्ष इसी समय यह 19.49 लाख हेक्टेयर थी।

दलहन: देश में दलहनों का कुल रकबा 136.36 लाख हेक्टेयर तक पहुँच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.74 लाख हेक्टेयर अधिक है। यह वृद्धि लगभग 2.8 प्रतिशत की है। दलहनों में चना सबसे आगे रहा है, जिसमें 5 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

प्रमुख रबी फसलों की बुवाई
9 जनवरी 2026 की स्थिति (लाख हे. में)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुवाई 2025-26	बुवाई 2024-25
गेहूँ	**312.35**	**334.17**	**328.04**
चावल	**42.93**	**21.71**	**19.49**
दालें	**140.42**	**136.36**	**132.61**
चना	100.99	95.88	91.22
मोटे अनाज	**55.33**	**55.20**	**53.17**
ज्वार	24.62	21.36	22.66
मक्का	23.61	25.24	23.49
तिलहन	**86.78**	**96.86**	**93.33**
सरसों	79.17	89.36	86.57
कुल	**637.81**	**644.29**	**626.64**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है। स्त्रोत : कृषि मंत्रालय

श्री अन्न और मोटे अनाज: श्री अन्न और मोटे अनाजों का कुल क्षेत्र 55.20 लाख हे. रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 2.03 लाख हे. अधिक है। खासतौर पर जौ और मक्का ने अच्छा प्रदर्शन किया है।

तिलहन: रबी सीजन 2025-26 में तिलहन फसलों का रकबा 96.86 लाख हेक्टेयर तक पहुँच गया है, जो पिछले वर्ष से 3.5 लाख हेक्टेयर अधिक है। यह लगभग 3.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। इसके अलावा अलसी, कुसुम और सूरजमुखी में भी विस्तार देखने को मिला है।

अब घटिया बीज बेचने वालों को... (पृष्ठ 1 का शेष)

बीज कंपनियों का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य

श्री चौहान ने कहा कि अब हर सीड कंपनी का रजिस्ट्रेशन किया जाएगा, जिससे यह साफ रहेगा कि कौन सी कंपनी अधिकृत है। उन्होंने कहा, 'पंजीकृत कंपनियों की जानकारी उपलब्ध रहेगी और कोई भी अनधिकृत विक्रेता बीज नहीं बेच पाएगा।'

परंपरागत बीजों पर कोई पाबंदी नहीं

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह ने इस भ्रम को दूर किया कि नया कानून किसानों के परंपरागत बीजों पर रोक लगाएगा। उन्होंने स्पष्ट कहा, 'किसान अपने बीज बो सकते हैं, दूसरे किसान को बीज दे सकते हैं। स्थानीय स्तर पर जो परंपरागत बीज विनिमय की परंपरा है, वो जारी रहेगी। इसमें कोई दिक्कत नहीं है।'

ICAR और देसी कंपनियां रहेंगी मैदान में मजबूत

कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह ने कहा कि सीड एक्ट में तीनों स्तर पर प्रावधान किए गए हैं- सार्वजनिक क्षेत्र (ICAR, कृषि विश्वविद्यालय, KVKs), देसी कंपनियां जो उच्च गुणवत्ता के बीज बनाती हैं, विदेशी बीजों के लिए उचित मूल्यांकन व्यवस्था। उन्होंने कहा, 'विदेश से आने वाले बीज पूरी तरह जांच और मूल्यांकन के बाद ही स्वीकृत होंगे। हमारे सार्वजनिक और देसी निजी क्षेत्र को मजबूत बनाया जाएगा ताकि किसानों तक अच्छे बीज पहुंचें।'

26 से 30 जनवरी तक मनाया जाएगा कृषि लोकरंग - 2026

युवा किसानों को उन्नत खेती से जोड़ने का महाअभियान : डॉ. यादव

भोपाल (कृषक जगत)। मध्यप्रदेश में 26 से 30 जनवरी तक 'कृषि लोकरंग-2026' को पूर्ण गरिमा, उत्साह और भव्यता के साथ मनाया जाएगा। यह आयोजन ग्राम पंचायत और विकासखंड स्तर तक आयोजित कर उन्नत खेती, नवाचार और कृषि उद्यमिता के प्रति विशेष रूप से युवा किसानों को जागृत करने का सशक्त माध्यम बनेगा।

बैठक में संस्कृति मंत्री श्री धर्मेंद्र लोधी, मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार श्री श्रीराम तिवारी, कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक बर्णवाल, अपर मुख्य सचिव श्री नीरज मंडलोई, कृषि सचिव श्री निशांत वरबडे, जनसंपर्क आयुक्त श्री दीपक सक्सेना, श्री आलोक सिंह सचिव मुख्यमंत्री उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कृषि लोकरंग-2026 की तैयारियों की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कृषि लोकरंग केवल उत्सव नहीं, बल्कि किसानों के ज्ञान, स्वाभिमान और आर्थिक सशक्तिकरण का पर्व है। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि आयोजन के दौरान देशज बीजों के संग्रहण एवं संचयन को प्रोत्साहित करने हेतु प्रतियोगिताएं, लखपति किसानों की प्रतियोगिता, उत्तम नर्सरी एवं बगीचा विकसित करने वाले किसानों का सम्मान तथा सफल किसानों के एग्री-बिजनेस मॉडल प्रस्तुत किए जाएं। इन मॉडलों से अन्य किसान भी प्रेरणा लेकर आय बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ सकें।

डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'कृषि कैबिनेट' का आयोजन भी किया जाएगा। इसके साथ ही किसान कल्याण एवं स्वाभिमान पर्व, कृषि ग्राम सभाएं, उन्नत कृषि यंत्रों के क्रेता-विक्रेताओं के सम्मेलन तथा विभिन्न स्तरों पर कृषि उत्सव आयोजित किए जाएंगे।

अब तक 50 लाख मीट्रिक टन हुई धान खरीदी

भोपाल। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि अभी तक 7 लाख 40 हजार 914 किसानों से 49 लाख 87 हजार 147 मीट्रिक टन धान की खरीदी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर की जा चुकी है। उन्होंने बताया है कि गत वर्ष 43 लाख 52 हजार 905 मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी। धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2369 रूपये प्रति क्विंटल है। धान की खरीदी 20 जनवरी 2026 तक की जायेगी। किसानों को 8291 करोड़ रूपये से अधिक राशि का भुगतान भी किया जा चुका है।

मप्र विधानसभा का बजट सत्र 16 फरवरी से

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा का बजट सत्र 16 फरवरी से 6 मार्च तक चलेगा। जारी अधिसूचना के मुताबिक, इस बार 12 बैठकों के साथ 19 दिनों तक सत्र आयोजित किया जाएगा। इस बजट सत्र की शुरुआत 16 फरवरी को राज्यपाल के अभिभाषण के साथ की जाएगी। राज्यपाल के अभिभाषण के बाद 17 फरवरी से लेकर 20 फरवरी तक प्रश्नोत्तर काल रहेगा। इसके बाद 21-22 फरवरी को विधानसभा का अवकाश रहेगा। उसके बाद 23 फरवरी से 27 फरवरी तक प्रश्नोत्तर काल रहेगा। इसके साथ-साथ शासकीय कार्य भी किए जाएंगे। जारी अधिसूचना के मुताबिक, मार्च महीने में सिर्फ दो ही दिन विधानसभा का बजट सत्र आयोजित किया जाएगा।

सीपीपीपी मॉडल से संस्थाओं को मजबूत बनाएं : श्री सारंग

सहकारिता विभाग की समीक्षा बैठक

भोपाल (कृषक जगत)। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने अपेक्स बैंक में सहकारिता विभाग के संभागों में पदस्थ संयुक्त आयुक्तों एवं जिलों में पदस्थ उप एवं सहायक आयुक्तों की विस्तृत समीक्षा करते हुए विभाग की वर्तमान स्थिति, प्रगति एवं आगामी कार्ययोजना की समीक्षा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में प्रमुख सचिव सहकारिता श्री डी.पी. आहूजा, आयुक्त सहकारिता श्री मनोज पुष्प, प्रबंध संचालक (उपभोक्ता संघ) श्री ऋतुराज रंजन, प्रबंध संचालक (बीज संघ) श्री महेंद्र दीक्षित, प्रबंध संचालक (अपेक्स बैंक) श्री मनोज गुप्ता सहित विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

ई-पैक्स एवं पोर्टल आधारित अंकेक्षण की गहन समीक्षा

बैठक के दौरान ई-पैक्स/पोर्टल आधारित अंकेक्षण, अंकेक्षण की वर्तमान प्रगति, पैक्स पुनर्गठन, सहकारी संस्थाओं की वित्तीय स्थिति एवं प्रशासनिक सुधार जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। मंत्री श्री सारंग ने स्पष्ट निर्देश दिए कि माह के अंत तक प्रदेश की सभी पैक्स को शत-प्रतिशत ई-पैक्स में परिवर्तित किया जाए।

सीपीपीपी मॉडल पर करें ठोस कार्य

श्री सारंग ने कहा कि समस्त मैदानी अधिकारी सीपीपीपी मॉडल को व्यवहार में लाकर सहकारिता संस्थाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और व्यवसायिक रूप से सक्षम बनाएं। उन्होंने निर्देश दिए कि संयुक्त आयुक्त संभाग स्तर पर प्रतिष्ठित एवं सफल व्यवसायियों के साथ बैठकें आयोजित करें तथा सीपीपीपी मॉडल के अंतर्गत ओडीओपी (एक जिला-एक उत्पाद) के चयनित उत्पादों को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।

ई-पैक्स के सफल क्रियान्वयन हेतु मानव संसाधन पर विशेष ध्यान

श्री सारंग ने कहा कि ई-पैक्स के प्रभावी एवं सुचारू क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त, प्रशिक्षित एवं तकनीकी रूप से दक्ष मानव संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

जिसको रहस्य गोपनीय रखना नहीं आता
वह सफलता का मुंह नहीं देख सकता। - चाणक्य

अन्नदाता आयुष्मान भवः !

कृषि प्रधान देश भारत में किसानों को 'अन्नदाता' के नाम से भी सम्बोधित करते हैं और अन्नदाताओं ने भी उन्हें दिये गए सम्मान का मान रखते हुए देश को खाद्यान्न के क्षेत्र में दलहन और खाद्य तेलों को छोड़कर आत्मनिर्भर बना दिया है। देश में करीब 14 करोड़ किसान हैं। अधिक उत्पादन के लिए कृषि भूमि और फसलों में रासायनिक खादों और जहरीली दवाईयों के अत्यधिक प्रयोग से जहां एक ओर कृषि भूमि की उर्वराशक्ति लगभग समाप्त हो गई है वहीं दूसरी ओर किसान भी इनके दुष्प्रभावों से प्रभावित हो रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप कैंसर, रक्तचाप, थायराईड, मधुमेह, पैरालाईसिस जैसी अनेक बीमारियों की चपेट में आने लगे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ईलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तो हैं लेकिन चिकित्सा की सुविधाएं बहुत कम होती हैं। सम्पूर्ण भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 31,882 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 6,359 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और 1.69 लाख उप स्वास्थ्य केंद्र हैं। कुछ उप स्वास्थ्य केंद्रों के पास अपने निजी भवन भी नहीं है और वे किराए या पंचायत भवन से चल रहे हैं। सामान्य क्षेत्रों में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर औसतन 30 हजार ग्रामीणों को स्वास्थ्य सेवाएं देने का मापदण्ड है। चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित स्वास्थ्य केंद्रों पर चिकित्सकों की निरंतर कमी रहती है और चिकित्सा सुविधाओं का अभाव बना रहता है इसलिए शहरों में शासकीय और निजी अस्पतालों में ग्रामीण मरीजों की संख्या भी अधिक रहती है।

जब से केंद्र सरकार ने आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना शुरू की है, यह योजना देश के गरीब और वंचित वर्ग के लिए संजीवनी बनकर सामने आई है। इस योजना में कमजोर परिवारों को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त अस्पताल में भर्ती होने और इलाज के लिए प्रति वर्ष 5 लाख रुपये तक का नि:शुल्क स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान किया गया है अर्थात् पांच लाख रूपये तक का नि:शुल्क इलाज कराया जा सकता है। इससे देश के करीब 50 करोड़ पात्र लाभार्थियों को देशभर के सूचीबद्ध अस्पतालों में कैशलेस इलाज की सुविधा प्राप्त हो रही है। यह सही है कि आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना से विशेषकर गरीबों को इलाज पर होने वाले खर्च से राहत मिल रही है। इस योजना का यह उजला पक्ष है जिससे यही महसूस होता है कि यह गरीबों के लिए वरदान है लेकिन इसके स्याह पक्ष पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। भोले - भाले ग्रामीण गरीब और किसान जब इलाज के लिए अस्पताल जाते हैं तो अनावश्यक जांच और आपरेशन कर देने

की घटनाएं बढ़ने और सुनने को मिल रही हैं। जब नि:शुल्क इलाज हो रहा है तब मरीज भी आसानी से आपरेशन कराने के लिए तैयार हो जाते हैं। देशभर में ऐसे हजारों की संख्या में प्रकरण सामने आये हैं जिनमें आवश्यकता नहीं होने पर भी आपरेशन कर दिया जाता है। इससे भले ही आपरेशन या इलाज का कोई खर्च नहीं देना होता लेकिन अनावश्यक रूप से किए गए आपरेशन का मरीज के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है और काफी संख्या में मरीजों को जीवन पर्यंत दवाईयों/बैसाखी के सहारे ही जीवन गुजारना पड़ रहा है।

कुछ अस्पतालों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने और वहां चिन्हित तथाकथित मरीजों को आयुष्मान कार्ड से नि:शुल्क इलाज करने का आश्वासन दिया जाता है। जागरूकता और बीमारियों के बारे में जानकारी नहीं होने के कारण ग्रामीणजन अस्पताल में भरती हो जाते हैं और अस्पताल प्रबंधन अपनी मरजी से इलाज करते हैं जब तक कि आयुष्मान योजना की राशि समाप्त न हो जाए। इससे यही प्रतीत हो रहा है कि क्या आयुष्मान योजना वास्तव में गरीबों को इलाज दिला रहा है या फिर कहीं यह इलाज के नाम पर धोखाधड़ी का माध्यम तो नहीं बनता जा रहा है ? मरीज को पूरी जानकारी दिए बिना ही पैकेज का उपयोग और कागजों पर इलाज दिखाने के भी प्रकरण सामने आ रहे हैं। वहीं ऐसा भी देखा जा रहा है कि कई पात्र गरीब आज भी योजना के लाभ से वंचित हैं। आयुष्मान कार्ड होने के बावजूद अनेक निजी अस्पताल इलाज करने से मना कर देते हैं। कहीं बेड उपलब्ध न होने का बहाना बनाया जाता है, तो कहीं इलाज के लिए अतिरिक्त पैसे माँगे जाते हैं। गरीब मरीज मजबूरी में या तो स्वयं खर्च उठाता है या इलाज अधूरा छोड़ देता है। ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जहाँ गरीब सिर्फ नाम का लाभार्थी बना और असली फायदा अस्पतालों ने उठा लिया।

अब जरूरत है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत- प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के बारे में व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाए जिसमें इस योजना के प्रावधानों के बारे में पूरी जानकारी देनी चाहिए। इसके साथ ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को सर्वसुविधायुक्त बनाने और चिकित्सकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने की जरूरत है ताकि मरीज का वहीं इलाज हो जाए जिससे आयुष्मान योजना का दुरूपयोग न हो। आपात स्थिति को छोड़कर मरीजों को निजी अस्पताल में भरती करने के पूर्व प्राथमिक चिकित्सा केंद्र से रेफर कराने से भी योजना के दुरूपयोग पर आंशिक रोक लगाई जा सकती है। योजना के कार्यान्वयन की निगरानी, अस्पतालों के दावों की समय पर जाँच, शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जरूरत है। ग्रामीण स्वास्थ्य को केवल एक विभागीय जिम्मेदारी न मानकर सामाजिक प्राथमिकता बनाने क़ी आवश्यकता है। चिकित्सकों और स्वास्थ्यकर्मियों को ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा के लिए प्रोत्साहन, बेहतर अधोसंरचना, डिजिटल तकनीक का प्रभावी उपयोग करके ही ग्रामीणों को बेहतर स्वास्थ्य समाधान दे सकते हैं। अब किसानों को भी गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा कि बीमार होने के प्रमुख कारण क्या हैं? कृषि भूमि में रासायनिक खादों और फसलों में जहरीली दवाओं का अत्यधिक उपयोग भी एक कारण हो सकता है। उत्पादन तो बढ़ा है लेकिन पोषक तत्वों की कमी हो गई है। इन सब कारकों पर व्यापक विचार विमर्श कर और इससे निकले निष्कर्ष पर इमानदारी से कार्यावयन से ही स्वस्थ भारत का सपना साकार हो सकेगा।

गाँवों में एक तिहाई लोगों को स्वच्छ पानी मयस्कर नहीं

• **डॉ. चन्दर सोनाने**

मध्यप्रदेश के इन्दौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी पीने से 18 लोगों की जान जाने के बाद अब एक और खबर आई है वह यह कि मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 36.7 प्रतिशत जगह नल का पानी पीने योग्य नहीं पाया गया। विश्व में भारत की अर्थव्यवस्था चौथे स्थान पर होने के दावे के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की यह खबर शर्मनाक है। ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल के हालात बयां करने वाली यह खबर केन्द्र सरकार की है। हाल ही में 4 जनवरी 2026 को जल जीवन मिशन की फंक्शनैलिटी असेसमेंट रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में 36.7 प्रतिशत पेयजल सैंपल असुरक्षित पाए गए हैं। इसको इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि पानी का हर तीसरा गिलास पीने योग्य नहीं पाया गया है।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत हर घर तक साफ पानी पहुँचाने के दावे की हकीकत केन्द्र की उक्त रिपोर्ट में हाल ही में सामने आ गई है। केन्द्र सरकार ने सितम्बर-अक्टूबर 2024 में मध्यप्रदेश के 15 हजार से ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों से पीने के पानी के सैम्पल लिये थे। अनेक सैंपलों में बैक्टीरिया और रासायनिक गड़बड़ियाँ पाई गई। देश में सबसे स्वच्छ शहर इन्दौर जिले में 100 प्रतिशत घरों में नल कनेक्शन होने के बावजूद 33 प्रतिशत घरों में ही पीने योग्य पानी पहुँच रहा है! अनूपपुर और डिंडोरी जिले में तो और भी खराब हालत है। इन दोनों जिलों में एक भी सैम्पल सुरक्षित नहीं मिला। बालाघाट, बैतूल और छिंदवाड़ा जिले में 50 प्रतिशत से ज्यादा सैम्पल दूषित मिले। अन्य जिलों की भी कमोबेश यही स्थिति है। ये आँकड़े प्रदेश सरकार के लिए शर्मनाक है। केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी और अत्यन्त महत्वपूर्ण जल जीवन मिशन के अंतर्गत 28 जुलाई 2024 तक देशभर में 78 प्रतिशत घरों में नल चालू है। किन्तु मध्यप्रदेश में क्वालिटी चेक की कमी के कारण हर साल हजारों लोग सुरक्षित पेयजल नहीं होने के कारण बीमार हो रहे हैं।

मध्यप्रदेश की इस हालत को देखते हुए केन्द्र सरकार ने मध्यप्रदेश सरकार को चेतावनी दी है कि अगर पानी की गुणवत्ता में सुधार नहीं किया तो 2026 में मिलने वाले आवंटन को घटाया जा सकता है। केन्द्र सरकार ने मध्यप्रदेश की इस स्थिति को व्यवस्था जनित आपदा बताया है। देश के हर राज्य के ग्रामीण अंचलों में ग्रामीणों को नल द्वारा शुद्ध पेयजल मिल सके इसके लिए जल जीवन मिशन शुरू किया। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण मिशन है। किन्तु राज्यों की लापरवाही के कारण ग्रामीणों को इस योजना का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है। मध्यप्रदेश के संदर्भ में हम बात करें तो मध्यप्रदेश के सरकारी आँकड़ों के अनुसार 99.1 प्रतिशत गाँवों में हर घर जल योजना के तहत पाईप डाल दिए गए हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि 76.6 प्रतिशत घरों में ही सही तरीके से नल काम कर रहे हैं। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि हर चौथा घर अब भी इस महत्वपूर्ण योजना के लाभ से वंचित है। जल जीवन मिशन की फंक्शनैलिटी असेसमेंट रिपोर्ट में हर तीसरे घर में पीने का पानी सुरक्षित नहीं पाया गया। रिपोर्ट के अनुसार 33 प्रतिशत घरों में नल का पानी गुणवत्ता परीक्षण में फेल हो गया है। यानी बड़ी आबादी को मिलने वाला पानी पीने के लिहाज से सुरक्षित नहीं है। इसके अतिरिक्त नल से दिये जाने वाले पीने के पानी की मात्रा भी तय मानक से कम पाई गई है। सरकारी मानक के अनुसार 55 लीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रतिदिन है। किन्तु मध्यप्रदेश के 30 प्रतिशत घरों को यह तय मात्रा नहीं मिल पा रही है। कई क्षेत्रों में तो पानी रोज आता ही नहीं है। यहीं नहीं पानी प्रदाय का समय भी तय नहीं है।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत नल से दिए जाने वाले पानी पर लोगों का पूरा भरोसा भी नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार 63 प्रतिशत से ज्यादा परिवार पानी को उबालकर, छानकर या ट्रीट करने के बाद ही पानी का उपयोग करते हैं। यह सरकारी जल आपूर्ति प्रणाली पर भरोसे की कमी को भी दिखाता है। यही नहीं मध्यप्रदेश के 26.7 प्रतिशत स्कूलों में पानी का सैम्पल माइक्रोबॉयोलॉजिकल टेस्ट में फेल पाया गया है। अर्थात् स्कूलों में बच्चों को मिलने वाला पानी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। केन्द्र सरकार की इस अत्यन्त महत्वपूर्ण जल जीवन मिशन का उद्देश्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गाँवों के लोगों को पानी के लिए भटकना नहीं पड़े और उन्हें अपने घर में ही नल से पानी मिल सके। इस पूरी व्यवस्था में सबसे बड़ी समस्या व्यवस्था की सामने आ रही है। इस मिशन में अब जो चुनौती आ रही है वह नल की नहीं है, बल्कि मेंटेनेंस, ट्रीटमेंट और मॉनिटरिंग की है। अनेक गाँवों में क्लोरीनेशन सिस्टम या तो है ही नहीं, या है तो वो पूरी तरह से सही काम नहीं कर रहा है। इसके साथ ही एक और कमी यह पाई जा रही है कि नल से मिलने वाले पानी के मासिक शुल्क की वसूली अत्यन्त कमजोर है। इससे मेंटेनेंस टिकाऊ नहीं बन पा रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि देश में जल जीवन मिशन का अत्यन्त महत्व है। किन्तु इसके क्रियान्वयन में अनेक कमियों में एक महत्वपूर्ण कमी यह भी है कि गांवों में इस मिशन के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी पंचायतों और लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को दे रखी है। इन दोनों विभाग में समुचित समन्वय नहीं होने से इस मिशन का पूरा लाभ ग्रामीणों को नहीं मिल पा रहा है।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कर्मचारी भी पंचायत के अधीन नहीं है। पंचायतों के पास पर्याप्त आवंटन भी नहीं होता है, जिससे कि वे पानी को नियमानुसार ट्रीटमेंट कर सके और स्वच्छ जल प्रदाय कर सके। यदि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के ग्रामीण क्षेत्र में काम कर रहे स्टाफ को पूरी तरह पंचायत के अधीन कर दिया जाए, तो वे और सही तरीके से काम कर सकेंगे। आमजन की भी यह जिम्मेदारी है कि उन्हें जब अपने घरों में ही नल से पीने का पानी मिल रहा है तो वे भी नियमानुसार निर्धारित किया गया मासिक शुल्क समय पर जमा करें। इस पूरी व्यवस्था की नियमित समीक्षा भी आवश्यक है। इससे जहाँ भी कमी पाई जाए, उस कमी को समय पर दूर किया जा सके। यह सब होगा तो निश्चित रूप से जल जीवन मिशन अपने उद्देश्यों को पूरी तरह से प्राप्त कर सकेगा, अन्यथा ऐसा ही चलता रहेगा !

● श्रीमती रिया ठाकुर, वैज्ञानिक,
कृषि विज्ञान केन्द्र, छिंदवाड़ा
riyath29@gmail.com

प्राकृतिक खेती

आज के समय की अनिवार्य आवश्यकता

मानव सभ्यता का इतिहास कृषि के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। कृषि ने ही मानव को भोजन, वस्त्र और आश्रय प्रदान कर उसे स्थायी जीवन की ओर अग्रसर किया। किंतु आधुनिक युग में कृषि का स्वरूप तेजी से बदला है। अधिक उत्पादन की लालसा में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और आधुनिक तकनीकों का अंधाधुंध प्रयोग किया गया, जिससे अल्पकाल में तो उत्पादन बढ़ा, परंतु दीर्घकाल में इसके गंभीर दुष्परिणाम सामने आए। मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, जल और पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव आज एक वैश्विक चिंता का विषय बन चुके हैं।

इन्हीं परिस्थितियों में प्राकृतिक खेती एक ऐसे विकल्प के रूप में उभरकर सामने आई है, जो न केवल कृषि को टिकाऊ बनाती है, बल्कि पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य की रक्षा भी करती है। आज यह स्पष्ट हो चुका है कि यदि हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित भविष्य चाहिए, तो कृषि को प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर चलना होगा।

प्राकृतिक खेती की अवधारणा

प्राकृतिक खेती एक ऐसी कृषि प्रणाली है, जिसमें खेती को प्रकृति के प्राकृतिक नियमों के अनुरूप किया जाता है। इसमें रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और कृत्रिम इनपुट्स का प्रयोग नहीं किया जाता, बल्कि स्थानीय और प्राकृतिक संसाधनों- जैसे गोबर, गोमूत्र, फसल अवशेष, जैविक घोल तथा प्राकृतिक जैविक क्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खेती का मूल दर्शन यह है कि मिट्टी स्वयं एक जीवंत तंत्र है, जिसमें असंख्य सूक्ष्मजीव, केंचुए और जैविक घटक मौजूद होते हैं। ये सभी मिलकर पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। जब रसायनों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है, तो यह जीवंत तंत्र नष्ट हो जाता है। प्राकृतिक खेती इसी तंत्र को पुनर्जीवित करने का प्रयास करती है।

आधुनिक कृषि की समस्याएँ

आधुनिक रासायनिक कृषि ने कई समस्याओं को जन्म दिया है। सबसे बड़ी समस्या मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट है। लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी की जैविक कार्बन मात्रा कम होती जा रही है, जिससे मिट्टी कठोर और कम उपजाऊ बनती जा रही है। इसके अतिरिक्त, कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से लाभकारी कीट और सूक्ष्मजीव नष्ट हो रहे हैं। जल स्रोतों में रसायनों का बहाव जल प्रदूषण को बढ़ा रहा है, जिससे पेयजल संकट गहराता जा रहा है। मानव स्वास्थ्य पर भी इसका गंभीर प्रभाव पड़ा है। आज कई गंभीर बीमारियों का संबंध रसायनयुक्त भोजन से जोड़ा जा रहा है। इन सभी समस्याओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वर्तमान कृषि प्रणाली दीर्घकाल तक टिकाऊ नहीं है।

प्राकृतिक खेती के प्रमुख घटक

प्राकृतिक खेती में कुछ प्रमुख तकनीकों और घटकों का प्रयोग किया जाता है। इनमें बीजामृत, जीवामृत, आच्छादन (मल्चिंग), फसल चक्र, मिश्रित खेती और न्यूनतम जुताई प्रमुख हैं। ये सभी तकनीकें मिलकर मिट्टी, पौधों और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करती हैं।

बीजामृत बीजों को रोगों से बचाता है, जबकि जीवामृत मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ाता है। मल्चिंग से मिट्टी की नमी बनी रहती है और खरपतवार नियंत्रित होते हैं। फसल चक्र और मिश्रित खेती से कीट-रोगों का प्राकृतिक नियंत्रण संभव होता है।

जैव विविधता और प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती जैव विविधता को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब खेतों में विभिन्न फसलें उगाई जाती हैं, तो पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है। इससे कीटों का प्राकृतिक नियंत्रण होता है और रसायनों की आवश्यकता नहीं पड़ती। जैव विविधता कृषि को अधिक लचीला और स्थायी बनाती है।

भारत में प्राकृतिक खेती की प्रासंगिकता

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में प्राकृतिक खेती का विशेष महत्व है। यहाँ अधिकांश किसान छोटे और सीमांत हैं, जिनके लिए महंगे रासायनिक इनपुट्स एक बड़ा बोझ हैं। प्राकृतिक खेती उन्हें कम लागत में खेती करने का अवसर प्रदान करती है। भारत सरकार और कई राज्य सरकारें भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चला रही हैं। इससे किसानों में जागरूकता बढ़ रही है और धीरे-धीरे प्राकृतिक खेती का क्षेत्रफल बढ़ रहा है।

चुनौतियाँ और समाधान

हालाँकि प्राकृतिक खेती के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन में कमी, तकनीकी ज्ञान की कमी और बाजार तक पहुँच जैसी समस्याएँ किसानों को हतोत्साहित करती हैं। इन चुनौतियों का समाधान प्रशिक्षण कार्यक्रमों, अनुसंधान, सरकारी समर्थन और उपभोक्ताओं में जागरूकता बढ़ाकर किया जा सकता है। जब बाजार में प्राकृतिक उत्पादों की मांग बढ़ेगी, तो किसानों को उचित मूल्य भी मिलेगा।

भविष्य की दिशा

भविष्य की कृषि को टिकाऊ बनाने के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना अनिवार्य है। यह केवल कृषि पद्धति नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जो मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करता है। यदि समय रहते इस दिशा में कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को गंभीर संकटों का सामना करना पड़ सकता है।

निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती आज के समय की केवल एक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि भविष्य की अनिवार्यता है। यह मिट्टी, जल, पर्यावरण, किसान और उपभोक्ता सभी के हित में है। वर्तमान पर्यावरणीय संकट, बढ़ती उत्पादन लागत और स्वास्थ्य समस्याएँ हमें यह संकेत देती हैं कि अब कृषि को नई दिशा देने का समय आ गया है।

'प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर की गई खेती ही मानवता को सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकती है और यही प्राकृतिक खेती का मूल संदेश है।'

प्राकृतिक खेती की आवश्यकता

मिट्टी संरक्षण के लिए

मिट्टी कृषि की आत्मा है। यदि मिट्टी स्वस्थ नहीं होगी, तो कृषि भी स्वस्थ नहीं रह सकती। प्राकृतिक खेती मिट्टी की जैविक संरचना को पुनर्स्थापित करती है। जैविक पदार्थों के उपयोग से मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ती है, जिससे पोषक तत्वों का चक्र सुचारु रूप से चलता है। इससे मिट्टी की जलधारण क्षमता बढ़ती है और वह लंबे समय तक उपजाऊ बनी रहती है।

जल संरक्षण और जल गुणवत्ता

आज भारत सहित विश्व के कई देशों में जल संकट गहराता जा रहा है। प्राकृतिक खेती में मल्चिंग और जैविक पदार्थों के उपयोग से मिट्टी में नमी बनी रहती है, जिससे सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। साथ ही, रसायनों के अभाव में जल स्रोत प्रदूषित नहीं होते। यह पद्धति भू-जल संरक्षण में भी सहायक सिद्ध होती है।

पर्यावरण संतुलन

प्राकृतिक खेती पर्यावरण के अनुकूल है। यह वायु, जल और भूमि प्रदूषण को कम करती है। इसके माध्यम से जैव विविधता को बढ़ावा मिलता है, जिससे प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र मजबूत होता है। पक्षी, मधुमक्खियाँ और मित्र कीट प्राकृतिक खेती में सुरक्षित रहते हैं, जो फसल उत्पादन में सहायक भूमिका निभाते हैं।

मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा

आज के समय में स्वास्थ्य सबसे बड़ी चिंता बन गया है। रसायनयुक्त भोजन मानव शरीर में धीरे-धीरे विष का संचय करता है। प्राकृतिक खेती से प्राप्त खाद्य पदार्थ विषमुक्त और अधिक पौष्टिक होते हैं। इससे न केवल रोगों का खतरा कम होता है, बल्कि समग्र स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

किसानों की आर्थिक स्थिति

प्राकृतिक खेती किसानों के लिए आर्थिक दृष्टि से भी लाभकारी है। इसमें बाहरी इनपुट्स पर निर्भरता कम होती है, जिससे उत्पादन लागत घटती है। किसान स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर आत्मनिर्भर बनता है। लंबे समय में यह खेती किसानों को स्थायी आय और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

ग्रीन हाउस में टमाटर की खेती

किसानों की आय का प्रमुख स्रोत

● शिवानी ● दिव्यांशी दीक्षित ● विवेक यादव
फल विज्ञान विभाग, उद्यान महाविद्यालय
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय, कानपुर, (उप्र)
मो.: 9411661462

भारतीय कृषि लंबे समय से प्राकृतिक संसाधनों, मौसम की अनिश्चितता और बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर रही है। टमाटर जैसी नकदी फसल, जिसकी मांग पूरे वर्ष बनी रहती है, खुले खेतों में उगाने पर अक्सर किसानों के लिए घाटे का सौदा बन जाती है। कभी अत्यधिक उत्पादन से दाम गिर जाते हैं, तो कभी मौसम की मार पूरी फसल बर्बाद कर देती है। ऐसे समय में ग्रीनहाउस में टमाटर की खेती किसानों के लिए आशा की एक मजबूत किरण बनकर सामने आई है, जो उत्पादन, गुणवत्ता और आय तीनों में स्थिरता प्रदान करती है।

ग्रीनहाउस खेती का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें प्रकृति पर निर्भरता कम हो जाती है। नियंत्रित तापमान और नमी के कारण टमाटर के पौधे स्वस्थ रहते हैं और लंबे समय तक फल देते हैं। पौधों पर लगने वाले फल आकार, रंग और गुणवत्ता में लगभग एक समान होते हैं, जिससे बाजार में उनकी मांग बढ़ जाती है। खुले खेतों में जहाँ टमाटर बारिश, पाले या तेज गर्मी से प्रभावित हो जाता है, वहीं ग्रीनहाउस में किसान इन जोखिमों से काफी हद तक सुरक्षित रहता है। आज के समय में उपभोक्ता न केवल सस्ती सब्जी, बल्कि सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण भोजन चाहता है।

ग्रीनहाउस में उगाए गए टमाटर कम रसायनों के उपयोग से तैयार होते हैं, जिससे वे स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहतर माने जाते हैं। यही कारण है कि शहरी बाजारों, बड़े खुदरा स्टोरों, होटलों और प्रोसेसिंग उद्योगों में ऐसे टमाटरों की मांग लगातार बढ़ रही है। इससे किसानों को सीधे बेहतर बाजार और उचित मूल्य मिलने की संभावना भी बढ़ती है। ग्रीनहाउस टमाटर खेती से जल और उर्वरकों की बचत भी एक बड़ा लाभ है। ड्रिप सिंचाई और संतुलित पोषण प्रबंधन के कारण

कम पानी में अधिक उत्पादन संभव होता है। वर्तमान समय में, जब जल संकट एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है, यह तकनीक टिकाऊ कृषि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके साथ ही, भूमि की उर्वरता भी लंबे समय तक बनी रहती है, जिससे भविष्य की खेती पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

कई राज्यों में यह देखा गया है कि ग्रीनहाउस टमाटर अपनाने वाले किसान केवल स्थानीय मंडियों पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि सीधे व्यापारियों, सुपरमार्केट और निर्यातकों से जुड़ रहे हैं। इससे बिचौलियों की भूमिका कम होती है और किसान को अपने उत्पाद का उचित मूल्य मिलता है। कुछ प्रगतिशील किसान चेरी टमाटर और रंगीन टमाटर जैसी विशेष किस्में उगाकर अतिरिक्त लाभ भी कमा रहे हैं। सरकारी नीतियाँ भी इस दिशा में सहायक साबित हो रही हैं। राष्ट्रीय बागवानी मिशन और अन्य योजनाओं के तहत ग्रीनहाउस निर्माण पर दी जाने वाली सब्सिडी ने छोटे और मध्यम किसानों के लिए इस तकनीक को सुलभ बनाया है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों और तकनीकी मार्गदर्शन के माध्यम से किसानों को आधुनिक कृषि से जोड़ा जा रहा है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें। आज जब खेती को घाटे का व्यवसाय मानकर युवा वर्ग इससे दूर होता जा रहा है, ग्रीनहाउस टमाटर जैसी आधुनिक खेती पद्धतियाँ कृषि की छवि बदलने का कार्य कर रही हैं। यह तकनीक यह साबित करती है कि सही योजना, तकनीक और बाजार से जुड़ाव के साथ खेती भी एक सम्मानजनक और लाभदायक व्यवसाय बन सकती है। अंततः यह कहा जा सकता है कि ग्रीनहाउस में टमाटर की खेती केवल एक नई कृषि तकनीक नहीं, बल्कि किसानों के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक ठोस कदम है। यह किसानों को मौसम और बाजार की अनिश्चितताओं से बचाते हुए स्थायी आय प्रदान करती है। इस तकनीक को व्यापक स्तर पर अपनाया जाए, तो यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और किसानों की आय बढ़ाने में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

आम में फल मक्खी एवं उसका नियंत्रण

● राम अवतार चौधरी, फल विज्ञान
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
● आस्था, विज्ञान, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर
ramawatarmoond1999@gmail.com

आम भारत का प्रमुख फल है और इसकी गुणवत्ता एवं उत्पादन को कई कीट प्रभावित करते हैं। इनमें सबसे खतरनाक कीट है। फ्रूट फ्लाई (फल मक्खी) यह मक्खी फल में अंडे देती है, जिससे फल सड़ जाते हैं, गिर जाते हैं और बाजार मूल्य कम हो जाता है। इसलिए फल मक्खी का प्रभावी नियंत्रण आम की सफल खेती के लिए आवश्यक है।

फल मक्खी क्या है?

● फल मक्खी एक छोटा भूरा-पीला रंग का कीट है।

● मादा मक्खी पके या कच्चे आम के फलों में छोटी-सी कट बनाकर अंडे देती है।

● कुछ दिनों बाद इन अंडों से लार्वा (कीड़े) निकलते हैं जो फल के गूदे को खा लेते हैं।

● परिणामस्वरूप फल सड़ने लगता है और पेड़ से गिर जाता है।

फल मक्खी से होने वाले नुकसान

● फलों में कीड़ा लगना

● उत्पादन में 30-80 प्रतिशत तक हानि

● फलों का समय से पहले गिरना

● बाजार में दाम कम मिलना

● निर्यात गुणवत्ता खराब होना

फल मक्खी के नियंत्रण के तरीके

स्वच्छता प्रबंधन

● गिरे हुए सड़े फलों को तुरंत इकट्ठा कर 'गड्ढे में दबाएँ' या नष्ट करें।

● संक्रमित फलों को पेड़ पर न छोड़ें।

● खेत साफ रखें, क्योंकि गिरे हुए फल मक्खी के प्रजनन का मुख्य स्रोत होते हैं।

बाइट ट्रैप

● प्रोटीन हाइड्रोलाइज़ेट + कीटनाशक मिश्रण को ट्रैप में लगाएँ।

● यह वयस्क मक्खियों को आकर्षित कर उन्हें मार देता है।

● प्रत्येक एकड़ में 10-12 ट्रैप लगाने की सलाह दी जाती है।

मिथाइल यूजेनॉल ट्रैप

● मिथाइल यूजेनॉल फल मक्खी के नर को आकर्षित करने वाला सबसे प्रभावी रसायन है।

● 1 लीटर पानी में मिथाइल यूजेनॉल + मैलाथियान मिलाकर लकड़ी के टुकड़ों पर डालें।

● इन्हें पेड़ों पर टांग दें।

● यह तकनीक नर मक्खियों की संख्या कम करती है, जिससे प्रजनन घटता है।

बैगिंग तकनीक

● कच्चे आमों पर पेपर/नेट बैग लगाएँ।

● इससे मक्खियाँ फलों तक नहीं पहुँच पातीं।

● यह तकनीक पूरी तरह जैविक और अत्यंत प्रभावी है।

जैविक नियंत्रण

● नीम तेल का छिड़काव 3-4 बार करें।

● फलों पर नीम खली घोल, लाल मिर्च+नीम मिश्रण का भी प्रयोग किया जा सकता है।

● स्पिनोसैड जैसे जैविक कीटनाशक सुरक्षित विकल्प हैं।

रासायनिक नियंत्रण

● छिड़काव तभी करें जब संक्रमण अधिक हो और आम पर बैगिंग न की गई हो।

● कीटनाशक का प्रयोग फूल आने और फल बनने के बाद सावधानी से करें।

● छिड़काव कटाई से 20-25 दिन पहले बंद कर देना चाहिए।

निवारक उपाय

● समय-समय पर बाग का निरीक्षण करें।

● पकने के शुरुआती समय में ही ट्रैप लगा दें।

● सिंचाई और पोषण संतुलित रखें ताकि पेड़ स्वस्थ रहे।

● पेड़ की छंटाई सही समय पर करें।

निष्कर्ष

आम में फल मक्खी एक गंभीर कीट है, परंतु सही प्रबंधन और समय पर नियंत्रण से इसकी हानि को काफी कम किया जा सकता है। स्वच्छता, ट्रैप, बैगिंग और जैविक तरीकों का संयोजन अपनाकर किसान उच्च गुणवत्ता के आम प्राप्त कर सकते हैं और बाजार में बेहतर भाव पा सकते हैं।

मधुमक्खी की शत्रु ट्रोपिलेप्स, एकरापिस वुडी माईट एवं प्रबंधन

● डॉ. अभिषेक शुक्ला
कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, वघई, गुजरात

ट्रॉपिलेप्स माईट एक परजीवी माईट है जो मुख्य रूप से मधुमक्खी शिशुओं और वयस्कों को प्रभावित करती है। यह मुख्य रूप से एशियाई क्षेत्रों में पायी जाती है, लेकिन मधुमक्खी पालन उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है और मधुमक्खियों के परजीवी के रूप में अपना जीवन व्यतीत करती है। ट्रोपिलेप्स माइट (ट्रोपिलेप्स क्लारी और ट्रोपिलेप्स मर्सिडेसी) की दो प्रजातियां यूरोपीय मधु मक्खियों (एपिस मेलिफेरा) पर परजीवीकरण करती पायी गयी हैं। यह माईट एक बाह्य-परजीवी (एक्टो-पैरासिटिक) माईट है जो नर और श्रमिक मधुमक्खियों के प्यूपा के रक्त (हिमोलिम्फ) को चूसती है, साथ ही ये ब्रूड पर भी प्रजनन करती है।

पहचान: ये माईट लाल-भूरे रंग की, लगभग 1.0 मि.मी. आकार की तथा 0.5 मि.मी. चौडी, अति सक्रिय माईट है। ये माईट, प्रायः वरोआ माईट के आकार से लगभग एक तिहाई ही होती है। इनके शिशु चार जोड़ी पैर वाले होते हैं तथा इनके पैरों की पहली जोड़ी प्रायः श्रृंगिका की तरह सीधी होती है और इनका शरीर खंडित होता है। यह माईट तेजी से चलती है, जिसे छत्ते के निरीक्षण के दौरान आसानी से देखा भी जा सकता है। ब्रूड कोशिकाओं में पाए जाने वाले युवा शिशु तथा प्यूपा सफेद रंग के होते हैं और मधुमक्खी के शिशुओं का भक्षण करते समय आमतौर पर ये गतिहीन हो जाती हैं।

जीवन चक्र और प्रजनन: ट्रॉपिलेप्स माईट का जीवन चक्र कई मायनों में वरोआ माईट के समान ही होता है, क्योंकि दोनों माईट प्रजातियाँ बाह्य-परजीवी है जो मधुमक्खी के प्रारंभिक चरणों को परजीवी बनाती हैं। हालाँकि, वरोआ माईट की तुलना में इसकी प्रजनन दर अधिक होने के कारण इस माईट का जीवन-चक्र बहुत छोटा होता है। मादा ट्रॉपिलेप्स माईट, ब्रूड कोशिकाओं में अंडे देती हैं। ट्रॉपिलेप्स माईट अपना जीवन चक्र 7 से10 दिनों में पूरा करता है, जिससे इनकी संख्या तेजी से बढ़ती है।

मधुमक्खियों पर प्रभाव: ट्रॉपिलैप्स माईट के संक्रमण से मधुमक्खी कालोनियों को गंभीर नुकसान होता है

विकृति: विकासशील मधुमक्खियों में शारीरिक असामान्यताएं जैसे विकृत छत्ते और वयस्क मधुमक्खियों में नाटापन, क्षतिग्रस्त पंख, पैर तथा पेट आदि दिखना सामान्य है इससे परजीवी माईट सिंड्रोम और कॉलोनी में गिरावट (कोलेप्स) आदि देखे जाते हैं।

ब्रूड का विनाश: ट्रॉपिलैप्स माईट के संक्रमण से मधुमक्खी कालोनियों की ब्रूड कोशिकाएं पूरी तरह से नष्ट हो जाती हैं।

कमज़ोर कॉलोनी: ट्रॉपिलैप्स माईट के संक्रमण से मधुमक्खी कॉलोनी कमजोर हो जाती है और उत्पादकता कम हो जाती है। यहां से मधुमक्खी कॉलोनी छोड़कर दूसरे स्थान पर जाने लगती है और ये इस माईट को नए स्थानों पर तेज़ी से फैलाती भी है। ये माईट वायरस को भी फैलाती हैं जो कॉलोनी के स्वास्थ्य और रोग की संवेदनशीलता को बहुत अधिक प्रभावित करती है।

नियंत्रण के उपाय

निगरानी: ब्रूड सेल की नियमित निगरानी करने से इसकी सही समय पर पहचान की जा सकती है।

जैविक उपायों से: माईट-प्रतिरोधी मधुमक्खियों का चयन करके भी इसका प्रभावी तरीके से नियंत्रण किया जा सकता है।

रासायनिक उपचार: प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले कार्बनिक एसिड और एसेंसियल तेलों का समय आने पर इस माईट के नियंत्रित हेतु प्रयोग किया जा सकता है।

श्वांस नाली की माईट (एकरापिस वुडी)

श्वांस नाली की माईट, एक्रेपिस वुडी एक अति सूक्ष्म माईट है जो मधुमक्खियों की श्वसन तंत्र को संक्रमित करती है। यह मधुमक्खी की उड़ान और समग्र स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। एक्रेपिस वुडी मधुमक्खियों के श्वसन तंत्र की एक सूक्ष्म, आंतरिक माईट है, जो रानी मधुमक्खियों, ड्रोन और श्रमिक मधुमक्खियों को संक्रमित करती है।

ये माईट, मधुमक्खियों के श्वसन पथ को अंदर से संक्रमित करती है और वही पर प्रजनन करती है और मधुमक्खी के रक्त (हेमोलिम्फ) को चूस कर अपना जीवन निर्वाह करती है। ये संक्रमित मधुमक्खी की सांस लेने की क्षमता को प्रभावित करती है। ये माईट विभिन्न रोगज़नकों के लिए श्वासनली की सतह को खोल देती है और पंख की मांसपेशियों में वायु प्रवाह को कम कर देती है। इसके परिणामस्वरूप मधुमक्खियाँ कमजोर और बीमार हो जाती हैं और उनका जीवनकाल काफी कम हो जाता है।

जीवन चक्र और प्रजनन: इस माईट का पूरा जीवन चक्र एक संक्षिप्त प्रवास अवधि को छोड़कर मधुमक्खी के श्वासनली के अंदर ही पूरा होता है। श्रमिक मधुमक्खियाँ अपनी कोशिकाओं से बाहर आने के 24 घंटों के भीतर मादा माईट, वयस्क मधुमक्खियों की श्वासनली में प्रवास करती है और जीवन भर या जब तक उनकी मेजबान मधुमक्खी मर नहीं जाती तब तक वहीं रहती है। एक बार में मेजबान मधुमक्खी के अंदर, प्रत्येक मादा माईट 3 से 4 दिनों की अवधि में 5 से 7 अंडे देती है और जीवन भर अंडे देती रहती है। अंडे 3 से 4 दिनों में फूटते हैं और लार्वा अवस्था से गुजरती हैं, फिर वयस्क चरण तक पहुँचने से पहले भिन्न अवस्थाओं से गुजरती है। नर को पूरी तरह विकसित होने में 11 से 12 दिन लगते हैं, जबकि मादाओं को 14 से 15 दिन लगते हैं।

मधुमक्खियों पर प्रभाव: ये माईट आकार में अतिसूक्ष्म होती है और इसलिए सामान्यतया नग्न आंखों से दिखाई नहीं देती है। संक्रमण के कोई विश्वसनीय अथवा दिखाई देने वाले कोई लक्षण नहीं होते हैं, जिससे इसका पता लगाना अत्यंत ही मुश्किल हो जाता है। एक सामान्य वक्ष पर पायी जाने वाली श्वासनली स्पष्ट, रंगहीन या हल्के क्रीम-पीले रंग की होती है। इसके विपरीत, संक्रमित श्वासनली का रंग फीका पड़ जाता है और माईट ग्रसन के परिणामस्वरूप धीरे-धीरे खराब हो जाती है। गंभीर रूप से संक्रमित मधुमक्खियों की श्वासनली भूरे धब्बों और पपड़ी जैसे घावों के साथ काली दिखाई देती है। इस माईट से ग्रसित मधुमक्खियों के पंख कमजोर हो जाते है जिससे प्रभावित मधुमक्खियाँ ठीक से उड़ नहीं पातीं हैं और पंखों को विषम कोण से पकड़ना एक सामान्य विशेषता है।

नियंत्रण के उपाय

निगरानी: श्वासनली संक्रमण की जांच के लिए विशेष उपकरण का उपयोग किया जाता है।

रासायनिक उपचार: फॉर्मिक एसिड या अन्य लक्षित समाधानों का उपयोग किया जाता है।

जैविक विधियाँ: मधुमक्खी कालोनियों की प्राकृतिक प्रतिरक्षा को मजबूत करना एक बहुत अच्छी विधि है।

दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान का द्वितीय चरण संपन्न

पशुपालकों के घर-घर जाकर विशेषज्ञों ने सलाह दी

बैतूल (कृषक जगत)। कलेक्टर बैतूल श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में 'दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान' का द्वितीय चरण सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। अभियान के अंतर्गत जिले के 14,640 पशुपालकों के घर-घर जाकर पशुपालन विभाग के विशेषज्ञों द्वारा पशुपालन से संबंधित आवश्यक एवं उपयोगी जानकारी प्रदान की गई।

उप संचालक पशुपालन श्री सुरजीत सिंह ने बताया कि अभियान का उद्देश्य दुग्ध उत्पादन में गुणात्मक सुधार लाना है। इसके लिए पशुपालकों को तीन प्रमुख स्तंभों नस्ल सुधार, पशु पोषण एवं पशु स्वास्थ्य पर व्यापक रूप से जागरूक किया गया। पशु स्वास्थ्य के अंतर्गत सभी आवश्यक टीकाकरण कार्यों की जानकारी दी गई, वहीं पशु पोषण में कृमिनाशक औषधियों के उपयोग से पशुओं के पेट में मौजूद कृमियों के नाश पर बल

दिया गया। साथ ही हरा चारा जैसे नेपियर घास, साइलेज, ज्वार, मक्का, चरी, बरसीम एवं लूसर्न खिलाने से दुधारू पशुओं के दूध उत्पादन में वृद्धि होने की जानकारी दी गई। अभियान के दौरान पशुपालकों को बताया गया कि नस्ल सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत जिले में सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन उपलब्ध है। पशुपालकों से अनुरोध किया गया कि वे इसी सीमन से नस्लवार कृत्रिम गर्भाधान कराएं। इससे नस्ल सुधार के साथ-साथ दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि होती है और पशुपालकों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। उप संचालक डॉ. सुरजीत सिंह द्वारा पशुपालकों से संवाद के दौरान पशु नस्ल सुधार, पोषण, स्वास्थ्य एवं उससे होने वाले आर्थिक लाभों पर विस्तार से समझाइश दी गई। इस अवसर पर प्रगतिशील पशुपालक श्री दिनेश खाड़े भी निरीक्षण दल के साथ उपस्थित रहे। उन्होंने गृह भेंट के दौरान उन्नत पशुपालन से आय एवं लाभ अर्जन के तरीकों पर पशुपालकों को प्रेरित किया। यह अभियान जिले में पशुपालन को सशक्त बनाने एवं पशुपालकों की आय बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

पूर्व संचालक कृषि डॉ. कौशल नहीं रहे

भोपाल। मध्यप्रदेश के पूर्व संचालक कृषि डॉ. जी.एस. कौशल का 12 जनवरी 2026 को आकस्मिक निधन हो गया वे 82 वर्ष के थे। डॉ. कौशल देश के प्रख्यात जैविक खेती विशेषज्ञ तथा कुशल प्रशासक के रूप में जाने जाते थे। डॉ. कौशल ने मध्यप्रदेश में जैविक खेती को पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने किसानों तक जैविक कृषि की अवधारणा पहुँचाने, प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सुदृढ़ करने तथा नवाचारों को प्रोत्साहित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। वे लगभग 9 वर्षों तक संचालक, कृषि के पद पर कार्यरत रहे।

डॉ. कौशल का अंतिम संस्कार भदभदा विश्राम घाट भोपाल में किया गया। जिसमें परिजन, मित्रगण, कृषि विभाग के अधिकारी, कर्मचारी शामिल हुए। इसमें मुख्य रूप से पूर्व संचालक कृषि श्री एस.डी. तिवारी, पूर्व गन्ना आयुक्त डॉ. साधूराम शर्मा, पूर्व संचालक कृषि अभियांत्रिकी श्री एस.एन. शर्मा, पूर्व उपसचिव श्री एस.के. उपाध्याय, अपर संचालक श्री सी.डी. सक्सेना एवं डी.एस. कुशवाह उपस्थित थे।

उल्लेखनीय है कि डॉ. कौशल ने अंतिम समय तक किसानों को मार्गदर्शन देना जारी रखा। मध्यप्रदेश में जैविक खेती एवं कृषि प्रशासन के क्षेत्र में उनके योगदान को सदैव स्मरण किया जाएगा। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि वे कृषक जगत द्वारा आयोजित देश के प्रथम 'जैविक हाट' के प्रणेता भी रहे। डॉ. जी.एस. कौशल का निधन प्रदेश के कृषि जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। कृषक जगत परिवार दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा शोकसंतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

संक्षिप्त परिचय

डॉ. कौशल का जन्म जुलाई 1944 में इंदौर में हुआ था और उन्होंने एग्रीकल्चर कॉलेज ग्वालियर से स्वॉइल साइंस और एग्रीकल्चर केमिस्ट्री में पोस्ट ग्रेजुएशन (1964) पूरा किया। उन्होंने JNKVV जबलपुर से स्वॉइल साइंस में डॉक्टरेट की डिग्री भी हासिल की है। उन्होंने 1964 में जबलपुर में एग्रीकल्चर केमिस्ट के साथ एग्रीकल्चर असिस्टेंट के रूप में अपना करियर शुरू किया और 1995 में मध्य प्रदेश के डायरेक्टर एग्रीकल्चर के पद तक पहुंचे और जुलाई 2004 में डायरेक्टर के पद से रिटायर हुए।

सेवाकाल के दौरान वे स्वॉइल सर्वे, स्वॉइल टेस्टिंग और एग्रीकल्चर एक्सटेंशन सेवाओं के प्रभारी रहे। उन्होंने अधिकांश सिंचाई, मध्यम और बड़ी परियोजनाओं का सर्वे किया, फसल पैटर्न, पानी की आवश्यकता पर काम किया और 50 से अधिक स्वॉइल सर्वे रिपोर्ट प्रकाशित कीं। स्वॉइल कंजर्वेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया, स्वॉइल एंड लैंड यूज सर्वे ऑर्गनाइजेशन ऑफ इंडिया और मैग्नम फाउंडेशन, नागपुर सहित बड़ी संख्या में संगठनों ने उन्हें सम्मानित किया। म.प्र. काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी ने उन्हें 'पारंपरिक खेती संरक्षण और सत्यापन' पर काम करने के लिए डॉ. आर.एल. रिछारिया फेलोशिप (2008-2012) से सम्मानित किया। एक सह-लेखक के रूप में उन्होंने 'म.प्र. के एग्रो क्लाइमेटिक जोन' पर एक किताब प्रकाशित की और स्वतंत्र रूप से चढ़ाए गए फूलों को मूल्यवान ऑर्गेनिक खाद के रूप में उपयोग करने से संबंधित एक किताब 'श्रद्धा के फूल से सोना' प्रकाशित की। उन्होंने 60 से अधिक वैज्ञानिक लेख लिखे और ज्यादातर किसानों के फायदे के लिए हिंदी में प्रकाशित किए।

जैविक हॉट 2004 में प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री सोमपाल शास्त्री एवं डॉ. जी.एस. कौशल।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए डॉ. कौशल।

स्मरणांजलि

माटी से जुड़ा कर्मयोगी मौन हो गया

(सुनील गंगराड़े)

किसान की बेहतरी, किसानी की चिंता और जैविक खेती को अपने जीवन की साधना मानने वाले भूमिपुत्र डॉ. गोपाल सिंह कौशल- जिन्हें स्नेहपूर्वक 'कौशल साहब' कहा जाता था- 12 जनवरी को अनंत में विलीन हो गए। 82 वर्ष की आयु में उन्होंने ऐसा भरपूर जीवन जिया, जो पूरी तरह कृषि, किसान और समाज को समर्पित रहा। कृषि पत्रकार के रूप में शुरू हुई मुलाकातें, कब परिवार के सदस्य के दर्जे के बीच बदल गई, पता ही नहीं चला। जोड़ने की कला में माहिर थे। तीन दशक से भी अधिक समय से यह संबंध बना रहा था।

मृदा विज्ञान में पीएचडी डॉ. कौशल जब खेत की माटी को स्पर्श करते थे, तो वह उनके लिए केवल मिट्टी नहीं होती थी; वह एक जीवंत संवाद का माध्यम बन जाती थी। यही कारण था कि उनकी सोच, सलाह और नीतियाँ काग़ज़ी नहीं, बल्कि खेत और किसान की ज़मीन से जुड़ी होती थीं।

मध्य प्रदेश कृषि विभाग के मुखिया के रूप में तथा कृषि विस्तार विशेषज्ञ की भूमिका में डॉ. कौशल ने प्रशासन और किसान के बीच की दूरी को पाटा। वे ऐसे अधिकारी थे, जिन्होंने पद को नहीं, बल्कि उद्देश्य को प्राथमिकता दी। उनका मानना था कि खेती केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि जीवन-पद्धति है और किसान को उसकी मेहनत का पूरा लाभ मिलना चाहिए।

डॉ. कौशल देश में जैविक खेती के शुरुआती और प्रभावशाली प्रवर्तकों में रहे। उन्होंने न केवल जैविक खेती की अलख जगाई, बल्कि मुख्यमंत्री से लेकर ग्राम स्तर तक के कृषि अधिकारियों को इस अभियान से जोड़ा।

उनके नेतृत्व में 'कृषक जगत' द्वारा वर्ष 2003 में भोपाल के बिट्टन मार्केट में देश का पहला जैविक हाट आयोजित किया गया। शहर के मध्य इस प्रकार के किसान मेले का

जैविक खेती पर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए पूर्व राज्यपाल श्री रामनरेश गुप्ता एवं डॉ. जी.एस. कौशल

आयोजन उनकी दूरदृष्टि का परिचायक था। उनका उद्देश्य था कि शहरी समाज, विशेष रूप से अभिजात्य वर्ग, यह समझे कि जैविक खेती और उसके उत्पाद किस प्रकार जीवन को स्वस्थ और बेहतर बना सकते हैं। यहीं से प्रदेश में जैविक आंदोलन ने संगठित रूप लिया।

एक आंदोलन के रूप में शुरू हुए इस नवाचार को अनेक विरोधों और अवरोधों का सामना करना पड़ा, किंतु डॉ. कौशल की युगदृष्टा सोच और अटूट संकल्प के आगे ये बाधाएँ टिक न सकीं। आज जैविक खेती को देश और प्रदेश की सरकारों ने अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है- यह उनकी दूरगामी दृष्टि का प्रतिफल है। मन्दिरों के निर्माल्य पुष्प का उपयोग खाद के रूप में करने का नवाचार भी आपने 25 वर्ष पहले ही शुरू कर दिया था।

डॉ. कौशल ने राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त अनेक कृषि उत्पादकता पुरस्कारों को उन्होंने व्यक्तिगत उपलब्धि न मानकर मध्य प्रदेश के किसानों को समर्पित किया।

जीवन के अंतिम दिनों तक वे कृषि विषयों पर सक्रिय रहे। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से वे लगातार अपने विचार साझा करते रहे और मीडिया जगत के लिए सदा उपलब्ध रहे। उनके साथ कृषि पत्रकार के रूप में शुरू हुई मुलाकातें कब पारिवारिक आत्मीयता में बदल गईं, इसका अहसास ही नहीं हुआ। लोगों को जोड़ने की कला में वे माहिर थे। यह संबंध तीन दशकों से भी अधिक समय तक बना रहा।

जब-जब जैविक खेती की चर्चा होगी, कौशल साहब के जोश, जुनून और जज्बे का स्मरण स्वाभाविक रूप से होगा। वे भले ही देह रूप में हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी सोच और दृष्टि जैविक खेती के ज्योति-पुंज के रूप में कृषि जगत को सदैव आलोकित करती रहेगी। ऐसे महामानव को सादर नमन।

श्रद्धांजलि

अत्यंत ही दुखद समाचार। तीन वर्ष कौशल साहेब और मैंने एक साथ काम किया। उस समय मैं कृषि सचिव था। हमारे बीच पूर्ण समन्वय और साझेदारी थी। मैंने उनके उम्र, ज्ञान और तजुर्बे को हमेशा वरीयता दी और उन्होंने मेरे में जो भी सामर्थ्य देखा उसकी सराहना की। हमारी टीम को दिल्ली में मिनिस्ट्री में भी इज़्ज़त के साथ देखा जाता था। वे कृषि विज्ञान के उच्च कोटि के प्रैक्टिशनर थे। मेरी हार्दिक इच्छा थी की वे कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति बनें। पर ऐसा नहीं हो पाया। मध्य प्रदेश का कृषि जगत उनका सदैव आभारी रहेगा।

विनम्र श्रद्धांजलि...

- आर. परशुराम, पूर्व मुख्य सचिव, म.प्र.

अत्यंत सरल सहज स्वभाव और कृषि क्षेत्र के ज्ञानी डॉ. कौशल सर के अवसान से जो शून्य निर्मित हुआ है उसकी पूर्ति होना असंभव है। विनम्र श्रद्धांजलि व सादर नमन।

- विजय पंडित, पूर्व संचालक कृषि, म.प्र.

मैंने विभाग में जब सहायक संचालक कृषि के पद पर जॉइन किया तब हमारे विभाग के संचालक कृषि डॉ. जी.एस. कौशल सर ही थे लगभग पाँच वर्ष संचालक कृषि रहे सेवानिवृत्त होने तक डॉ. कौशल सर के कार्यकाल में उनके द्वारा सिखाई गई बातें किसान हित में योजनाओं के क्रियान्वयन का तरीका विशेष रूप से जैविक खेती के प्रति उनका दृष्टिकोण आज भी हमे प्रेरणा देता हैं। वे हमेशा अपने विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों को परिवार की तरह मानते थे। उनके कार्यकाल में जैविक खेती के क्षेत्र में एवं कृषि क्षेत्र के अनेक सम्मान पुरस्कार प्रदेश को मिले थे। शुरुआती दिनों में मैं कटनी जिले में पदस्थ था वहाँ पर एक आदर्श जैविक ग्राम नैंगवा विकसित किया गया था, डॉ. कौशल सर का उस ग्राम से अत्यंत लगाव रहा प्रतिवर्ष उनकी वहाँ विजिट होती थी लगभग 40 आदिवासी परिवार के उस ग्राम को पूर्ण जैविक ग्राम के रूप में अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उस ग्राम की महिला कृषक श्रीमती उत्तरा बाई की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर जैविक कृषक के रूप में हुई,नैंगवा ग्राम के किसानों के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहे। सेवानिवृत्त के बाद भी कौशल सर का स्नेह मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद हमेशा मिलता रहा। भावपूर्ण श्रद्धांजलि..

- जितेन्द्र कुमार सिंह, उपसंचालक, छिंदवाड़ा

राजधानी की पहचान गुलाब नगरी के रूप में होगी : श्री कुशवाह

2028 में भोपाल में होगा वर्ल्ड रोज कन्वेंशन

भोपाल (कृषक जगत)। भोपाल शहर की नई पहचान गुलाब नगरी के रूप में होगी। इसके लिये वर्ल्ड रोज सोसायटी और उद्यानिकी विभाग संयुक्त प्रयास करेगा। यह बात उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने 45वीं अखिल भारतीय गुलाब प्रदर्शनी के समापन अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि जनवरी 2028 वर्ल्ड रोज कन्वेंशन भोपाल में आयोजित किया जायेगा, जिसमें 40 देशों से गुलाब विशेषज्ञ भाग लेंगे। इसमें गुलाब खेती, प्रदर्शनी, कार्यशालाएं और बागवानी पर नवाचारों में विषय-विशेषज्ञ सम्मिलित होंगे।

श्री कुशवाह ने कहा कि इस आयोजन में गुलाब उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिये व्यवसायिक से लेकर शौकिया तौर पर बगीचे, टैरिस गार्डन या गमलों में पौधे रोपित करते हैं, उन्हें विभिन्न पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पर्यावरण के प्रति उनकी रूझान को बनाये रखने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2028 में होने वाले वर्ल्ड रोज कन्वेंशन के लिये भोपाल शहरवासियों की सहभागिता से शासकीय और निजी उद्यानों को गुलाब उद्यानों के रूप में विकसित किया जायेगा। उद्यानिकी विभाग द्वारा संचालित गुलाब उद्यान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने का प्रयास किया जायेगा।

फूलों की खेती को प्रोत्साहन

आयुक्त उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण श्री अरविंद दुबे ने इस भव्य आयोजन के लिये भोपालवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है। इसमें उद्यानिकी विभाग द्वारा फूलों की खेती को प्रोत्साहित करने की विशेष कार्ययोजना तैयार की गई है। श्री दुबे ने कहा कि फूलों का उत्पादन आज के दौर में रोजगार का बड़ा माध्यम बनता जा रहा है। बड़ी संख्या में शिक्षित किसान, युवा उद्यमी फूलों के उत्पादन से जुड़कर लाभ कमा रहे हैं।

विश्व गुलाब सम्मेलन होगा म.प्र. में

वर्ल्ड रोज सोसायटी के अध्यक्ष श्री सुशील प्रकाश ने कहा कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो हर 3 साल में विश्व में गुलाब सम्मेलन आयोजित करती है। गुलाबों के प्रचार-प्रसार, शोध और बागवानी करने के लिये काम करने वाली महत्वपूर्ण संस्था है। मध्यप्रदेश रोज सोसायटी इसकी महत्वपूर्ण सदस्य है। उन्होंने बताया कि 2025 में जापान में हुए 20वें विश्व गुलाब सम्मेलन में 2028 में होने 21वें गुलाब सम्मेलन की मेजबानी करने का अवसर मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल को प्राप्त हुआ है।

विजेताओं को किया पुरस्कृत

दो दिवसीय गुलाब प्रदर्शनी के समापन कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इनमें संस्थागत उद्यान विकास के लिये ओवरऑल चैम्पियनशिप विधानसभा उद्यान को दी गई। व्यक्तिगत श्रेणी में ओवरऑल चैम्पियनशिप श्रीमती भावना पाण्डे को, किंग ऑफ द शो, प्रिंसेस ऑफ शो और सर्वोत्तम सफेद गुलाब के लिये बीएमएचआरसी को रनिंग शील्ड प्रदान की गई। इसके साथ ही अन्य वर्गों में विजेताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

फोटो गैलरी

भोपाल के जम्बूरी मैदान में 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' के शुभारंभ अवसर पर 1101 ट्रैक्टरों की रैली निकाली गई। इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी ट्रैक्टर चलाकर आनंद लिया।

भोपाल के जम्बूरी मैदान में 'कृषक कल्याण वर्ष 2026' के शुभारंभ अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में कृषक जगत के स्टॉल पर बीज प्रमाणीकरण के एमडी श्री आर.एस. सिसोदिया, एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कम्पनी के प्रबंधक श्री प्रशांत कुमार, सहायक संचालक कृषि श्री गोपाल सिंह सोलंकी एवं प्रकाश दुबे।

श्रद्धा सुमन

डॉ. कौशल : मध्यप्रदेश की कृषि के स्वर्णकाल के शिल्पकार

(एस.वी. श्रीवास्तव 'विजी')

गुजरती 19वीं सदी के उत्तरार्ध और शुरुआती 20वीं सदी के दौरान हमने मध्यप्रदेश कृषि के जिस स्वर्णकाल का अनुभव किया, उसका सर्वाधिक श्रेय पूर्व कृषि संचालक डॉ. जी.एस. कौशल को है, जिनके लिए स्वर्गीय लिखना बहुत कष्टकारी हो रहा है। कुछ लोग देह से विदा होकर भी कर्म और स्मृतियों में जीवित रहते हैं। उनके कार्यकाल में कृषि सम्मान निधि, लाड़ली बहना, नकद राशियों के ईनाम, पुचकार, प्रलोभन और दिवास्वप्न नहीं थे। कर्ज माफी भी याद नहीं पड़ रही। फसल बीमा और मुआवजों का बंटवारा भी किसानों की सालाना उम्मीद बना नहीं रहता था। खेतों से लेकर दफ्तरों तक, ज्यादातर रुचि फसल उत्पादन बढ़ाने और किसान को आत्मनिर्भर बनाने पर ही केंद्रित थी। डॉ. कौशल ने जैविक खेती के रूप में अचानक कृषि की परम्परागत प्रथा का नए पैटर्न में शंखनाद कर दिया। यह एक साहसिक और दूरदर्शी निर्णय था, जिसने प्रदेश की कृषि को नई दिशा दी। जुनून और दीवानगी की हद तक लगाव था उनमें जैविक खेती के लिए। लोग मनोविनोद में उन्हें जीएस कौशल की जगह जैविक कौशल भी कह देते थे।

यह उपनाम उनके कर्मों का स्वाभाविक सम्मान था। किसानों में जैविक खेती के प्रति लगाव का ऐसा मंत्र फूंका कि दो-दो सौ किलोमीटर से अधिक लंबी पदयात्रा कर, किसान खुद ही जैविक खेती का प्रचार करने निकल पड़े। उनके उर्वर मस्तिष्क में ऑर्गेनिक फॉर्मिंग के प्रचार प्रसार के नए और अनूठे खयालात निरंतर उपजते, जिन्हें वे तत्काल फलीभूत कर देते। प्रशासनिक अकादमी, मंत्रालय को जाते रास्तों के किनारे और यहाँ तक कि श्मशानों में नाडेप व वर्मी कम्पोस्ट संरचनाएँ बनवाना उनकी अनूठी सोच का उदाहरण है। मंदिरों से निकले फूलों और शवों पर चढ़ाई गई मालाओं को सम्मानपूर्वक खाद में बदलने की अवधारणा बाद में अन्य राज्यों ने भी अपनाई। उन्हीं से विचार-विमर्श कर मैंने उनके लिए कई लेख लिखे। किंतु उनकी उदारता का प्रमाण यह था कि वे स्वयं कहते— 'इनमें तुम्हारा नाम भी डाला करो।' 'श्रद्धा के फूलों से सोना' पुस्तक का उन्होंने विशेष रूप से मुझे श्रेय दिया।

'कृषक जगत' उनका प्रिय कृषि समाचार पत्र था और उसके संपादक श्री सुनील गंगराड़े जी से उनका मित्रवत संवाद निरंतर बना रहता था। उनकी मित्र मंडली में डॉ. साधुराम शर्मा का स्थान विशेष था। वर्षों की आत्मीयता का प्रमाण यह रहा कि शांति धाम में डॉ. शर्मा उन्हें स्मरण करते हुए रो पड़े। उन्होंने कहा- डॉ. जी. एस. कौशल का निधन एक व्यक्ति का नहीं, कृषि क्षेत्र में एक युग का अवसान है। व्यस्तताओं के बावजूद वे टीवी कार्यक्रमों के लिए समय निकाल लेते थे। एक बार दूरदर्शन के लाइव कार्यक्रम में जाना था। एंकर मैं ही था। इधर मंत्रियों की प्रतीक्षा कृषक जगत के एक कार्यक्रम में थी। वे गेट पर मंत्रीगण से मिलकर सहजता से दूरदर्शन जाने का कहते हुए निकल गए। उनकी शासकीय सेवाकाल के अंतिम दिन भी मेरे साथ वे सजीव कृषि कार्यक्रम में शामिल हुए। कर्मचारियों को जिले में भेजने पर बार-बार उनकी कुशल क्षेम पूछना और भूकंप की आशंका में शासन के निर्देश पर, पूरे संचालनालय को खाली करवाने के बाद स्वयं सबसे अंत में बाहर निकलना-उन्हें प्रशासक से आगे पिता तुल्य व्यक्तित्व का धनी बनाता है। नैगवां, रजपुरा, मलगांव जैसे गाँव शत-प्रतिशत जैविक ग्रामों में तब्दील हुए। फंदा फार्म उनकी जैविक प्रयोगशाला था, जहाँ वे हर सप्ताह पहुँचते। आज भी उनके नेतृत्व में मिले अनेकों कृषि उत्पादकता पुरस्क्कार और अलंकरण, अल्मारियां खुलने पर उनकी स्मृतियों को ताजा कर देते हैं।

टीम पर भरोसा करना उनकी कार्यशैली की पहचान थी। श्री संग्राम सिंह तोमर, डॉ. डी. एन. शर्मा, श्री सी.डी. सक्सेना, श्री एस.के. भटनागर, श्री एल.पी. पटेल, श्री विजय पंडित, श्री के.एस. टेकाम, श्री एस.के. उपाध्याय श्री जे.एस. गुर्जर आदि अधिकारी उनकी सोच को आगे बढ़ाने में सहभागी बने। व्यक्तिगत जीवन में उनकी करुणा और मानवीयता और भी गहरी थी। मेरी माँ के निधन पर चौथी मंज़िल तक सीढ़ियाँ चढ़कर सांत्वना देने पहुँचना, पिता के न रहने पर विश्राम घाट तक आना, ऐसी संवेदना, ऐसा स्नेह दुर्लभ होता है।

उनके जाने के बाद शोक संदेशों की बाढ़ आना स्वाभाविक था, पर उनकी अंतिम विदाई में कुछ निकट समझे जाने वाले, कृपा पात्र और कृतज्ञ चेहरों का न दिखना एक कसक छोड़ गया। समाचार न मिल पाना तो रिग्रेटेबल हो सकता है किन्तु व्यस्तता की आड़, उपयुक्त बहाना नहीं है। हालांकि इससे उनके कद में कोई कमी नहीं आती। कृषि विकास में उनकी भूमिका समकालीन 'गोपाल' जैसी थी—जो उनकी अनुपस्थिति में भी ऊर्जा का संचार करती रहेगी। यही किसी सच्चे कर्मयोगी की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। डॉ. जी. एस. कौशल की सोच, उनके प्रयोग, उनकी संवेदना और उनका विश्वास- प्रदेश की मिट्टी, किसान और कृषि तंत्र में हमेशा जीवित रहेगा। विनम्र श्रद्धांजलि।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

किसानों को अब ई-टोकन से मिलेगा खाद

इंदौर (कृषक जगत)। राज्य शासन के निर्देशानुसार किसानों को सरलता, सुलभता एवं रियल टाइम पारदर्शिता के साथ उर्वरक उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ई-विकास प्रणाली शुरू की गई है। इस प्रणाली के माध्यम से किसानों को ई-टोकन से खाद का वितरण किया जाएगा। इस प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जिले कृषि उत्पादन आयुक्त श्री अशोक वर्णवाल की अध्यक्षता में प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संभाग के संयुक्त संचालक कृषि, संभाग के समस्त उप संचालक कृषि, क्षेत्रीय प्रबंधक मार्कफेड, क्षेत्रीय प्रबंधक एमपी एग्रो एवं जिला विपणन अधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, प्रबंधक सहकारी समितियों, विपणन समितियों एवं विपणन संघों से संबंधित गोदाम प्रभारी तथा ऑपरेटर्स उपस्थित रहे। इस दौरान ई-टोकन प्रणाली के तकनीकी पहलुओं, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के तरीकों पर विस्तृत प्रशिक्षण एवं चर्चा की गई।

कृषि उप संचालक श्री सी.एल. केवड़ा ने बताया कि कृषकों को समयसीमा में पारदर्शिता के साथ उर्वरक उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शासन द्वारा ई-टोकन एवं उर्वरक वितरण प्रणाली लागू की जा रही है। बताया गया कि कृषक स्वयं भी अपनी सुविधा अनुसार उर्वरक क्रय कर सकते हैं। इसके लिए किसान अपने मोबाइल के माध्यम से निम्नानुसार प्रक्रिया कर ई-टोकन जारी कर, गूगल पर https://etoken.mpkrishi.org लिंक के माध्यम से कृषक अपने आधार नंबर एवं ओटीपी फीड कर लॉग इन कर सकते है।

लॉग इन करने के उपरांत पोर्टल पर एग्री स्टैक (फार्मर आईडी) से कृषि भूमि अपडेट होकर, मौसम एवं फसल का चयन करने के उपरांत फसल तथा कृषि भूमि अनुसार वैज्ञानिक आधार पर उर्वरक की गणना होकर पोर्टल पर स्वतः अपडेट होगी, उसके बाद यदि कृषक सहकारी समिति के सदस्य है या नहीं का चयन करेंगे, पोर्टल पर प्रदर्शित होने के उपरांत कृषक भाई उर्वरक विक्रेता मार्कफेड, एम.पी. एग्रो, विपणन समिति एवं निजी उर्वरक विक्रेताओं के यहाँ उपलब्ध स्टॉक की जानकारी प्रदर्शित होगी, जिसमे किसान अपनी सुविधा अनुसार उर्वरक विक्रेताओं का चयन कर ई-टोकन जारी हो जायेगा। किसान चयनित उर्वरक विक्रेताओं के यहाँ से 3 दिन के अंदर उर्वरक क्रय कर सकते है। किसान विक्रेता के यहां जाएंगे तो विक्रेता द्वारा मोबाइल ऐप से किसान का ई-टोकन स्कैन किया जायेगा और उर्वरक वितरण की पुष्टि की जाएगी। किसान उर्वरक प्राप्ति के बाद किसानों को SMS एवं WhatsApp के माध्यम से भी भुगतान रसीद प्राप्त होगी। यदि किसी किसान द्वारा 3 दिन के अंदर खाद क्रय नहीं किया जाता है, तो टोकन स्वतः निरस्त हो जाएगा, ऐसी स्थिति में 3 दिन के बाद दोबारा ई-टोकन जनरेट करना होगा।

जिले में विगत दिवस समस्त पंजीकृत थोक एवं खुदरा उर्वरक विक्रेताओं को भी इस प्रणाली के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया। इसमें खुदरा स्तर पर ई-विकास प्रणाली के प्रयोग, किसानों की सेवा प्रदान करने की प्रक्रिया और सिस्टम में होने वाली संभावित चुनौतियों के समाधान पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को जिले के उप संचालक कृषि श्री सी. एल. केवडा एवं सहायक संचालक कृषि श्री संदीप यादव, श्री विजय जाट एवं अनुविभागीय कृषि अधिकारी श्री शोभाराम एस्के, कृषि विकास अधिकारी श्री सी.एल. मालवीय भी उपस्थित रहे।

सहकारी बैंक द्वारा किसानों को कृषि यंत्रों के लिए ऋण वितरण

देवास (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री ऋतुराज सिंह के निर्देशानुसार जिले में आधुनिक कृषि यंत्रों की उपलब्धता बढ़ाकर नवीन एवं रोजगारोन्मुखी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित देवास द्वारा किसानों को कृषि यंत्रों के लिए ऋण वितरण किया जा रहा है।

इस कड़ी में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित देवास द्वारा कस्टम हायरिंग योजनांतर्गत ट्रैक्टर एवं सहायक कृषि यंत्रों के लिए साख सहकारी संस्था मर्यादित खातेगांव के कृषक श्री रंजीतसिंह को ट्रैक्टर एवं अन्य कृषि यंत्रों के लिए 16 लाख 83 हजार रूपये का ऋण स्वीकृत किया है। योजना से किसानों को लाभ मिलेगा एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे। स्वीकृत ऋण से क्रय किये गये कृषि यंत्रों की चाबियां शाखा प्रबंधक शाखा खातेगांव द्वारा कृषक को सौंपी गई।

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित देवास द्वारा आचार्य विद्यासागर योजनांतर्गत ऋण, पशुपालन एवं मछली पालन के लिए कार्यशील पूंजी, वाहन ऋण अन्य ऋण भी प्रदान किये जा रहे हैं। ऋण संबंधित जानकारी के लिए जिले के किसान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित देवास में सम्पर्क कर सकते हैं।

कृषि विभाग की योजनाएं

नलकूप खनन

योजना : नलकूप खनन

पात्रता मापदंड : प्रदेश के समस्त वर्ग के अनुसूचित जाति/जनजाति के कृषकों को सफल-असफल नलकूप खनन पर लागत का 75 प्रतिशत या अधिकतम 25 हजार रुपये जो भी कम हो अनुदान देय है। सफल नलकूप खनन पर पंप स्थापना के लिए लागत का 7 प्रतिशत या अधिकतम 5 हजार रुपये।

आवेदन कैसे करें: योजनांतर्गत कृषकों द्वारा क्षेत्र कृषि विस्तार अधिकारी को नलकूप खनन कराने के लिए आवेदन अनुविभागीय अधिकारी के माध्यम से, प्रथम आयें-प्रथम पायें के आधार पर जिले के उप संचालक कृषि के यहां पंजीयन करवाया जाता है। जिन कृषकों द्वारा सहकारी अथवा व्यवसायिक बैंकों से ऋण लिया गया हो या स्वयं के व्यय से नलकूप खनन किया हो, अनुदान नगद में न दिया जाकर कृषकों के बैंक खातों में ही जमा किया जायेगा।

लाभ की राशि : अनुदान नगद में न दिया जाकर कृषकों के बैंक खातों में ही जमा किया जायेगा।

लाभ के वितरण की आवृत्ति : योजना के प्रावधान अनुसार।

पर ड्रॉप मोर क्रॉप PDMC

योजना : पर ड्रॉप मोर क्रॉप PDMC

पात्रता मापदंड : योजनांतर्गत समस्त वर्ण के लघु सीमांत कृषकों को इकाई लागत का 50 प्रतिशत तथा अन्य कृषकों को इकाई लागत का 45 प्रतिशत आर्थिक सहायता दिये जाने का प्रावधान है।

आवेदन कैसे करें: योजना अंतर्गत कृषकों के आवेदन का पंजीयन ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर आवेदन करेंगे।

लाभ की राशि : ऑनलाइन डीबीटी व्यवस्था लागू होने के आरटीजीएस के माध्यम से कृषकों अथवा निर्माता के बैंक खातों में सीधे स्थानांतरित किया जाता है।

लाभ के वितरण की आवृत्ति : योजना के प्रावधान अनुसार कृषि उन्नति योजना के तहत सब मिशन ऑन सीड एंड प्लांटिंग मटेरियल अंतर्गत बीजग्राम कार्यक्रम।

बीजग्राम कार्यक्रम

योजना : कृषि उन्नति योजना के तहत सब मिशन ऑन सीड एंड प्लांटिंग मटेरियल अंतर्गत बीजग्राम कार्यक्रम।

पात्रता मापदंड : सभी वर्ग के कृषकों को एक एकड़ बीजोत्पादन कार्यक्रम लेने के लिए आवश्यक बीज की मात्रा अनुदान पर प्रदाय की जाती है।

आवेदन कैसे करें : एम.पी. किसान ऐप पर या संबंधित जिले के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी कार्यालय में संपर्क करें।

स्त्रोत : जनसंपर्क विभाग म.प्र. के प्रकाशन 'नई राहें नए अवसर' से उद्धृत।

वैज्ञानिक कृषि से मृदा गुणवत्ता व स्वस्थ उत्पादन संभव : श्रीमती पटले

सिवनी। वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाकर मृदा की गुणवत्ता बनाए रखना, कृषि यंत्रों का समुचित उपयोग तथा उर्वरकों का संतुलित प्रयोग किसानों की आय बढ़ाने एवं स्वस्थ उत्पादन के लिए आवश्यक है। यह बात सिवनी कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) सिवनी के भ्रमण के दौरान कही।

श्रीमती पटले का केवीके में कार्यक्रम का शुभारंभ किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल ने केवीके द्वारा संचालित किसान हितैषी गतिविधियों की जानकारी दी।

मुख्य अतिथि उद्बोधन में कलेक्टर ने प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने, फसल विविधीकरण अपनाने, रासायनिक दवाओं के न्यूनतम उपयोग, गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराने तथा मृदा परीक्षण के प्रति किसानों को जागरूक करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक, ड्रोन, नैनो उर्वरक एवं कृषि यंत्रों का सही उपयोग खेती को लाभकारी बना सकता है।

कृषि महाविद्यालय जबलपुर से रावे प्रशिक्षण हेतु आई छात्राओं से संवाद करते हुए कलेक्टर ने कहा कि केवीके एवं किसानों के खेतों में प्राप्त यह व्यावहारिक अनुभव भविष्य में कृषि क्षेत्र में उनके योगदान को सशक्त बनाएगा।

इसके पश्चात कलेक्टर ने फसल संग्रहालय, पोषण वाटिका, प्रजनक बीज प्रक्षेत्र, प्राकृतिक खेती प्रक्षेत्र, केंचुआ खाद व अजोला उत्पादन इकाई, पशुपालन इकाई, नेपियर घास प्रक्षेत्र एवं अमरूद उद्यान का भ्रमण किया। ड्रोन से नैनो उर्वरक छिड़काव का प्रदर्शन किया गया, जिसमें वैज्ञानिकों एवं इफको के ड्रोन विशेषज्ञ द्वारा इसके लाभ बताए गए।

कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन वैज्ञानिक डॉ. निखिल सिंह ने किया।

समस्या -समाधान

समस्या – पपीता अक्टूबर में लगाया था जैविक खाद का उपयोग किया था पौधों की बढ़वार अच्छी नहीं हो रही है और पत्तियों में पीलापन आ रहा है उपाय बतलाये।

– तुलाराम नरवरिया

समाधान– आप केवल जैविक उत्पादन का प्रयोग करके खेती करते हैं यह बात अनुकरणीय है। जहां तक बढ़वार का प्रश्न है गिरते तापमान का तो असर होगा ही। पौधों का रखरखाव भी करना पड़ता है। आप निम्न उपचार करें।

- अच्छी पकी हुई गोबर खाद 10 किलो/ पौध पौधों के चारों ओर सक्रिय जड़ों के पास थाला बना कर बिखेरें।
- पत्तियों पर पीलापन खतरनाक लक्षण है यह कहीं वाईरस का आक्रमण तो नहीं है वाईरस पौधों में सफेद मक्खी के कारण आता है। सफेद मक्खी की सक्रियता पर नजर रखें अन्यथा बीमारी बढ़ जायेगी।
- जैविक कीटनाशक स्वयं बनाकर उपयोग करें 1 किलो तम्बाकू के पत्ते, 500 ग्राम नीम का तेल, 25 ग्राम कपड़े धोने का साबुन। तंबाकू के पत्तों को 5 लीटर पानी में 3 दिन तक भिगोकर रखें, निचोड़ कर घोल में 500 ग्राम नीम तेल डालें तथा 25 ग्राम साबुन मिलायें। 500 लीटर पानी में 15 लीटर घोल बनाकर छिड़काव करें।

समस्या– मैं जायद की तिल लगाना चाहता हूं क्या मुझे आर्थिक लाभ अन्य फसलों की तुलना में अधिक होगा तकनीकी बतायें।

– जयशंकर लाल

समाधान – जायद के मौसम में मक्का, तिल, मूंगफली, भिंडी, मूंग, उड़द लगाकर अतिरिक्त आय कमाई जा सकती हैं। तिल्ली की काश्त अगर निम्न तकनीकी बिंदुओं को ध्यान में रखकर की जाये तो खरीफ की तुलना में जायद में अधिक लाभ कमाया जा सकता है। आपको पता होगा बाजार में फुटकर भाव में तिल्ली 200 किलो तक बिक रही है यदि 700-800 किलो/हे. भी पैदा कर ली जाये तो अच्छी आय संभव है।

- तिल्ली की विकसित जातियाँ जैसे टी.के.जी.22, टी.के.जी.55, जे.टी.एस. 8, टी.के.जी. 36 इत्यादि प्रमुख हैं।
- बुआई का उचित समय फरवरी माह है जब तक केवल आलू, मटर, तोरिया इत्यादि के खेत उपलब्ध हो सकेंगे।
- उर्वरक में नत्रजन (यूरिया) 130 किलो, 250 किलो सिंगल सुपर फास्फेट तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश 33 किलो/हे. दिया जाये।
- उर्वरक बीज मिश्रण कदापि नहीं किया जाये।
- बीज दर 5-6 किलो/हे. यथासंभव खेत में कतार खाली बनाकर गोबर की खाद में बीज मिलाकर हाथ से ऊरा जाये तो अच्छा अंकुरण मिल सकेगा।
- पत्तीमोडक कीट तथा भभूतिया रोग के नियंत्रण के लिये क्विनालफॉस 25 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर दो छिड़काव 15 दिनों के अंतर से तथा भभूतिया की रोकथाम के लिये सल्फेक्स 2 ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।

समस्या – मेरी लहसुन की फसल पर पत्तियां पीली पड़ रही हैं उपाय बतायें।

– पप्पूनाथ बैरागी

समाधान – किसी भी फसल के पीलापन के एक से अधिक कारण हो सकते हैं। आपकी फसल में माहो का प्रकोप, पत्तियों पर धब्बा रोग, पानी की अधिकता अथवा नत्रजन उर्वरक की कमी कोई भी कारण हो सकता है। जिसके चलते फसल में पीलापन/पत्तियां सूखने के लक्षण आ रहे हैं। आप निम्न उपाय करें–

- यदि पर्याप्त उर्वरक पूर्व में नहीं दिया गया हो तो यूरिया फसल में सिंचाई/निंदाई के बाद दें।
- यदि जल लग्नता की स्थिति दिखाई दे रही हो अतिरिक्त जल का रिसाव करें।
- डाईथेन एम 45 की दो ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- रोगर 1 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

प्राकृतिक खेती – अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

खरपतवार प्रबंधन

प्राकृतिक खेती में खरपतवार प्रबंधन करने के असरदार तरीके क्या हैं?

असरदार खरपतवार प्रबंधन तरीकों में पलवार, हाथ से खरपतवार निकालना और नीम आधारित उत्पाद जैसे प्राकृतिक खरपतवारनाशकों का इस्तेमाल करना शामिल है।

क्या पलवार प्राकृतिक खेती में खरपतवार प्रबंधन में मदद कर सकती है, और यह कैसे किया जाता है?

हाँ, पलवार या (मल्चिंग) में खरपतवार को बढ़ने से रोकने और नमी बचाने के लिए मिट्टी को पुआल, पत्तियों या फसल के बचे हुए हिस्सों जैसी जैविक सामग्री से ढका जाता है।

क्या कोई प्राकृतिक खरपतवारनाशक या खरपतवार हैं जिनका मैं प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल कर सकता हूँ?

नीम-आधारित उत्पाद और विनेगर सॉल्यूशन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना प्राकृतिक खरपतवार दमन के तौर पर काम कर सकते हैं।

कटाई और कटाई के बाद के तरीके

प्राकृतिक खेती में मुझे कैसे पता चलेगा कि मेरी फसल कटाई के लिए तैयार है?

आपकी फसल कटाई के लिए तैयार है या नहीं, यह जानने के लिए रंग परिवर्तन, पत्तों का सूखना, फल/अनाज की बनावट (कठोरता/नमी), और फसल की नमी के स्तर जैसे प्राकृतिक संकेतों पर ध्यान दें।

प्राकृतिक खेती में फसलों की कटाई की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सबसे अच्छे तरीके क्या हैं?

तेज़, साफ़ औज़ारों का इस्तेमाल करें, फसलों को धीरे से संभालें, और खराब मौसम में कटाई से बचें।

क्या कटी हुई उपज की भंडारण अवधि बढ़ाने के लिए कोई प्राकृतिक तरीके हैं?

स्वच्छ भंडारण, ठंडा तापमान और प्राकृतिक परिरक्षकों का उपयोग करने जैसी तकनीकें कटी हुई उपज की भंडारण अवधि बढ़ा सकती हैं।

जैविक उपज को खराब होने और कीटों से बचाने के लिए मुझे इसे कैसे भण्डारण करना चाहिए?

उत्पाद को साफ, हवादार कंटेनर या कमरों में स्टोर करें, और कीटों को रोकने के लिए नीम के पत्तों जैसे प्राकृतिक तरीकों का इस्तेमाल करने पर विचार करें।

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक – रु. 95 – कोड : 016
सब्जियों में पौध संरक्षण – रु. 75 – कोड : 017
मशरूम एक लाभ अनेक – रु. 45 – कोड : 019
मिर्च की उन्नत खेती – रु. 55 – कोड : 020
केला उत्पादन – रु. 70 – कोड : 025
गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण – रु. 75 – कोड : 027

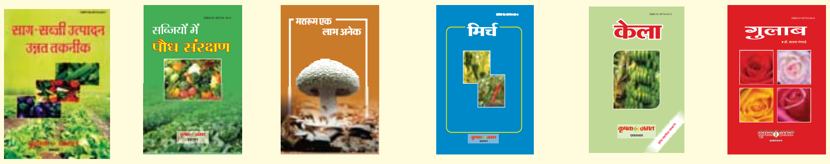

पपीता – रु. 55 – कोड : 031
अदरक – रु. 55 – कोड : 032
फलों की खेती – रु. 75 – कोड : 040
सजाएं फूलों से बगिया – रु. 65 – कोड : 041
घर की बगिया – रु. 95 – कोड : 050

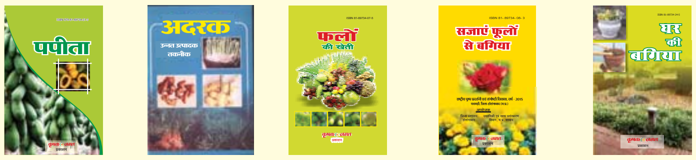

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं
016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐
नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें ☐
कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

आंवला स्वास्थ्य लाभ एवं मूल्य वर्धित उत्पाद - 2

आंवला के उत्पाद

• निधि जोशी, विषय वस्तु विशेषज्ञ
कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल
joshinidhi894@gmail.com

आंवला एक अत्यंत पोषक और औषधीय गुणों से भरपूर फल है, जिसे आयुर्वेद में 'अमृत फल' की संज्ञा दी गई है। यह छोटा, हरा-पीला फल स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले यौगिकों से भरपूर है और भारतीय संस्कृति, आयुर्वेद और आधुनिक पोषण विज्ञान में गहराई से निहित है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन सी, एंटीऑक्सीडेंट, खनिज तत्व और फाइबर पाए जाते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, पाचन सुधारने, त्वचा व बालों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने तथा मधुमेह व हृदय रोगों के जोखिम को कम करने में सहायक होते हैं। आंवले का नियमित सेवन समग्र स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है। इसके साथ ही आंवले से विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार किये जाते हैं, जो न केवल इसके पोषण गुणों को लंबे समय तक सुरक्षित रखतें हैं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में आय एवं रोजगार सृजन का भी महत्वपूर्ण साधन बनतें हैं।

आंवले का विभिन्न प्रकार के मूल्य वर्धित उत्पादों में उपयोग किया है, जो स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करता है और इसकी बाजार में मांग का विस्तार करता है।

आंवला जूस– ताजा आंवला का रस एक लोकप्रिय उत्पाद है जो अपने तीखे स्वाद और केंद्रित स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है। प्रतिरक्षा में सुधार और शरीर को डिटॉक्सीफाई करने के लिए इसका सेवन स्वास्थ्य टॉनिक के रूप में किया जाता है।आंवला जूस बनाने के लिए ताजे व पके आंवले धोकर बीज निकालें और छोटे टुकड़ों में काट लें। इन टुकड़ों को थोड़े पानी के साथ मिक्सर में पीसकर छलनी से छान लें। स्वादानुसार काला नमक या शहद मिलाकर आंवला जूस सेवन कर सकते हैं।

आंवला मुरब्बा– आंवला मुरब्बा एक पौष्टिक और स्वादिष्ट परिरक्षित उत्पाद है, जिसे आंवले के टुकड़ों को चाशनी में पकाकर तैयार किया जाता है। इसकी प्रक्रिया में आंवले उबालकर बीज निकालते हैं, फिर चीनी की चाशनी में हल्की आंच पर पकाते हैं।अंत में इलायची या केसर मिलाकर ठंडा कर भंडारण किया जाता है, जिससे यह लंबे समय तक सुरक्षित रहता है।

आंवला पाउडर– सूखे आंवला को पीसकर एक महीन पाउडर बनाया जाता है, जिसका उपयोग हर्बल चाय, सप्लीमेंट्स और स्किनकेयर उत्पादों में किया जाता है।

कैंडिड आंवला– कैंडीड आँवला एक पौष्टिक व स्वादिष्ट मूल्यवर्धित उत्पाद है, जिसे ताजे आँवले से सरल विधि द्वारा तैयार किया जाता है। इसकी प्रक्रिया में आँवले को धोकर उबालना, बीज निकालना तथा चीनी की चाशनी में कुछ समय तक भिगोकर सुखाना शामिल है। यह उत्पाद विटामिनसी से भरपूर होता है, लंबे समय तक सुरक्षित रहता है और स्वरोज़गार व आय-वृद्धि के लिए उपयोगी है।

आंवला अचार– आँवले का अचार बनाने के लिए ताजे आँवले धोकर उबाल या भाप में नरम किए जाते हैं, फिर उनके टुकड़े कर बीज निकाल दिए जाते हैं। इन टुकड़ों को नमक, हल्दी, सौंफ, मेथी, सरसों और लाल मिर्च पाउडर जैसे मसालों के साथ अच्छी तरह मिलाया जाता है। सरसों का तेल मिलाकर अचार को काँच के जार में भरकर कुछ दिनों तक धूप में रखा जाता है, जिससे स्वाद विकसित होता है। आँवले का अचार आहार में आंवला के उपयोग में विविधता जोड़ता है।

आंवला जैम और चटनी– आँवला जैम और चटनी बनाने के लिए ताज़े आँवले को धोकर उबाल या भाप में पकाया जाता है, फिर बीज निकालकर गूदा तैयार किया जाता है। जैम के लिए गूदे में चीनी मिलाकर गाढ़ा होने तक पकाया जाता है, जबकि चटनी के लिए इसमें नमक, मसाले और सिरका/नींबू रस मिलाया जाता है। ये दोनों उत्पाद स्वादिष्ट होने के साथ पोषण से भरपूर हैं और लंबे समय तक सुरक्षित रखे जा सकते हैं।

हर्बल सप्लीमेंट और कैप्सूल– आंवला हर्बल सप्लीमेंट एवं कैप्सूल प्राकृतिक रूप से विटामिन सी से भरपूर होते हैं, जो शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक हैं। यह पाचन तंत्र को मजबूत करने, त्वचा और स्वास्थ्य बनाए रखने में उपयोगी माने जाते हैं।

स्किनकेयर उत्पाद– आंवला अपनी त्वचा और बालों को बढ़ाने वाले गुणों के कारण शैंपू, तेल और फेस मास्क में एक प्रमुख घटक है। यह सौंदर्य प्रसाधन उद्योग में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

किण्वित उत्पाद– आंवला-आधारित वाइन, साइडर और प्रोबायोटिक्स नवीन उत्पादों के रूप में लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं, जो फल के प्राकृतिक किण्वन गुणों का लाभ उठाते हैं।

सर्दियों का टॉनिक चुकंदर सेहत के लिए लाभदायक

शायद कम लोग ही जानते हैं कि चुकंदर में लौह तत्व की मात्रा अधिक नहीं होती है, किंतु इससे प्राप्त होने वाला लौह तत्व उच्च गुणवत्ता का होता है, जो रक्त निर्माण के लिए विशेष महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि चुकंदर का सेवन शरीर से अनेक हानिकारक पदार्थों को बाहर निकालने में बेहद लाभदायी है।

चुकंदर के संबंध में एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि इसके कंद के अलावा चुकंदर की हरी पत्तियों का सेवन भी बेहद लाभदायी है। इन पत्तियों में कंद की तुलना में तीन गुना लौह तत्व अधिक होता है। पत्तियों में विटामिन ए भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। कंद व इसकी पत्तियां रक्त निर्माण के लिए व हानिकारक तत्वों को शरीर से बाहर निकालने अर्थात् क्लींजर के रूप में कार्य करते हैं। चुकंदर में पोटेशियम, सोडियम, कैल्शियम, मैग्नीज व रेशे की पर्याप्त मात्रा होती है। पाचन योग्य शर्करा की उपस्थिति के कारण चुकंदर का सेवन ऊर्जा भी प्रदान करता है। ऐसा समझा जाता है कि चुकंदर का गहरा लाल रंग इसमें लौह तत्व की प्रचुरता के कारण है, बल्कि सच यह है कि चुकंदर का गहरा लाल रंग इसमें पाए जाने वाले एक रंगकण (बीटा सायनिन) के कारण होता है। एंटी ऑक्सीडेंट गुणों के कारण ये रंगकण स्वास्थ्य के लिए अच्छे माने जाते हैं।

चुकंदर में पाए जाने वाले फोलिक एसिड, पोटेशियम व मुलायम रेशा भी इसके पोषणिक गुणों को बढ़ाते हैं। चुकंदर का नियमित सेवन संपूर्ण शरीर को निरोग रखने में सहायक है। हालांकि हमारे दैनिक आहार में चुकंदर को अभी भी उचित स्थान प्राप्त नहीं है, फिर भी इसे नियमित खाने से ना सिर्फ कई रोगों में लाभ होता है बल्कि यह त्वचा की खूबसूरती भी प्रदान करता है। इससे हिमोग्लोबिन बढ़ता है फलस्वरूप चेहरे की लालिमा बढ़ती है।

स्वास्थ्यवर्धक है खीरा

खीरा स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद रहता है। खीरे के सेवन से पाचन क्रिया ठीक रहती है। इसका प्रयोग होटल, ढाबे तथा शहरों में अधिकतर खाना खाने के साथ सलाद के रुप में करते है। खीरे के सेवन करने से मनुष्य के शरीर को पानी की पूर्ति होती है। इसके प्रयोग से पोषक तत्वों की भी पूर्ति होती है। इस प्रकार से खीरे के अंदर निम्न पोषक तत्व होते हैं, जैसे- पोटेशियम, सोडियम, कैल्शियम, खनिज पदार्थ, कैलोरीज, फॉस्फोरस, विटामिन सी तथा अन्य कार्बोहाइड्रेटस। बाजार में खीरे की अधिक मांग बने रहने के कारण खीरे की खेती किसान भाइयों के लिए बहुत ही लाभदायक है। खीरे का उपयोग खाने के साथ सलाद के रुप में बढ़ता ही जा रहा है, जिससे बाजार में इसकी भी कीमते लगातार बढ़ रही है। इसके साथ ही खीरे की खेती रेतीली भूमि में अच्छी होती है। गर्मियां आते ही खीरा हर घर की एक जरुरत बन जाता है। शरीर को ठंडक देने के लिए ये एक कारगार और नेचुरल उपाय है। मुख्य रुप से सलाद में प्रयोग होने वाले खीरे में बहुत कम मात्रा में कैलोरी पायी जाती है। यही वजह है कि यह मोटापा कम करने के इच्छुक लोगों के लिए

किसी वरदान से कम नहीं है। वैसे सिर्फखीरा ही नहीं इसका छिलका भी बहुत उपयोगी है। खीरे के छिलके से क्या-क्या फायदे मिलते हैं।

पाचन के लिए फायदेमंद: खीरे के छिलके में ऐसे फाइबर मौजूद होते हैं जो घुलते नहीं है, ये फाइबर पेट के लिए संजीवनी बूटी की तरह काम करता है। कब्ज की परेशानी को दूर करने में भी ये कारगर है, तथा पेट भी अच्छी तरह साफ हो जाता है।

वजन कम करने में सहायक: खीरा भी वजन कम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन छिलके के साथ इसका सेवन करना और भी अधिक फायदेमंद रहता है।

विटामिन-के का अच्छा माध्यम: खीरे के छिलके में विटामिन-के पर्याप्त मात्रा में मिलता है, ये विटामिन प्रोटीन को एक्टिव करने का काम करता है। जिसकी वजह से कोशिकाओं के विकास में मदद मिलती है, साथ ही इससे ब्लड-क्लॉटिंग की समस्या भी पनपती है।

आंखों के लिए: छिलके समेत खीरा खाने से आंख की रोशनी अच्छी रहती है। इसके छिलके में बीटा कैरोटीन होता है, जिससे आंखों की रोशनी अच्छी होती है।

त्वचा के लिए: टैनिंग और सनबर्न में भी खीरे के छिलके का इस्तेमाल फ़ायदेमंद साबित होता है। इससे त्वचा का रुखापन भी कम होता है और मॉश्चराइजर बना रहता है। कई लोग इसके छिलके को सुखाकर पीस लेते हैं और उसमें गुलाब जल की बूंदें मिलाकर फेस पैक की तरह इस्तेमाल करते हैं।

पाक्षिक पंचांग

19 जनवरी से 1 फरवरी 2026 तक

विक्रम संवत् 2082

माघ शुक्ल 1 से माघ शुक्ल 15 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार	
19	जनवरी	सोम	माघ शुक्ल	1	
20	जनवरी	मंगल	----------	2	पंचक 1.48 रात से
21	जनवरी	बुध	----------	3	पंचक
22	जनवरी	गुरु	----------	4	विनायकी चतुर्थी व्रत, पंचक
23	जनवरी	शुक्र	----------	5	बसंत पंचमी, पंचक
24	जनवरी	शनि	----------	6	शीतलाष्टमी व्रत, पंचक
25	जनवरी	रवि	----------	7	नर्मदा जयंती, पंचक 12.7 दिन तक
26	जनवरी	सोम	----------	8	गणतंत्र दिवस
27	जनवरी	मंगल	----------	9	महानंदा नवमी
28	जनवरी	बुध	----------	10	
29	जनवरी	गुरु	----------	11	जया/अजा एकादशी व्रत
30	जनवरी	शुक्र	----------	12	प्रदोष व्रत
31	जनवरी	शनि	----------	13/14	
1	फरवरी	रवि	----------	15	माघी पूर्णिमा/स्ना.दा. पूर्णिमा

123certificates

एग्रीकल्चरल इंश्योरेंस ने किया कृषकों की समस्याओं का समाधान

भोपाल (कृषक जगत)। समृद्ध किसान- समृद्ध प्रदेश का लक्ष्य लेकर मप्र में वर्ष 2026 कृषि विकास साल मनाया जा रहा है। कृषक कल्याण कार्यक्रम की शुरुआत भोपाल में प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा भव्य समारोह आयोजित कर की गई। इस अवसर पर जम्बूरी मैदान में वृहद किसान सम्मेलन में हजारों किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में एग्रीकल्चरल इंश्योरेंस कंपनी ऑफ इंडिया लि. ने स्टाल लगाकर कार्यक्रम में आए कृषकों को फसल बीमा सम्बंधी जानकारी दी एवं उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। इस अवसर पर स्टाल में कंपनी के प्रबंधक श्री प्रशांत कुमार एवं श्री अमित प्रसाद उपस्थित थे।

एनएफएल उर्वरक जागरूकता पर प्रशिक्षण

छिन्दवाड़ा (कृषक जगत)। नेशनल फ़र्टिलाइजर्स लि. (एनएफएल) द्वारा चाँद स्थित विक्रय केन्द्र पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कृषि महाविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. संत कुमार शर्मा, वरिष्ठ सहायक संचालक कृषि श्री सचिन दास, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी चौरई श्री उमेश पाटिल एवं क्षेत्रीय प्रबंधक श्री यशवंत कुमार झारिया, जिला प्रभारी छिंदवाड़ा श्री राकेश करोड़ा, श्री अजय कुमार अहिरवार मौजूद थे। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री झारिया ने अपने सम्बोधन में एनएफएल के विभिन्न उत्पादों एवं पीओएस सेल की विस्तार से जानकारी दी।

वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री एम. आर. मरावी ने मृदा में जैव उर्वरकों एवं बेंटोनाईट सल्फर के प्रयोग बताए। डॉ. शर्मा ने फसल चक्र, मौसम विज्ञान पर मार्गदर्शन दिया। सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी श्री दास ने संतुलित उर्वरक उपयोग के साथ मिट्टी परीक्षण तकनीक बताई।

कार्यक्रम में शामिल कृषकों को उपहार स्वरूप किसान किट वितरित की। इस अवसर पर डीलर श्री आलोक कुमार जैन भी उपस्थित थे।

किसानों के हितार्थ आदानों का विक्रय जरूरी : श्री मोदी

बीज -कीटनाशक विक्रेता सम्मेलन

मन्दसौर (कृषक जगत)। कृषि व्यवसाय को किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए किया जाए तो व्यापारी एवं किसान दोनों के लिए सफलता के द्वार खुलते हैं। किसानों के पक्ष में उच्च गुणवत्ता युक्त खाद, बीज, कीटनाशक उपलब्ध कराने से उसकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया जा सकता है। मन्दसौर जिला बीज एवं कीटनाशक विक्रेता संघ मिलन समारोह के अवसर पर उक्त विचारों को सम्बोधित करते उप संचालक कृषि श्री रविन्द्र मोदी ने विक्रेताओं से आग्रह किया। विक्रेता संघ समय-समय पर कार्यक्रम आयोजित कर एकजुटता का परिचय देता है वहीं व्यवसाय में आ रही परेशानियों का समाधान खोजने की पहल होती है। समारोह में सहायक संचालक कृषि श्रीमती अनिता धाकड़, श्री पी. एस. कटारा, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री चेतन पाटीदार, संघ के अध्यक्ष श्री राकेश जैन अन्य पदाधिकारियों में सर्वश्री लक्ष्मण मेघनानी, अनिल शर्मा (भूमिका), सूरज गुप्ता, सत्यनारायण सेठिया (कयामपुर), डॉ. विनोद जैन, गोविंद पोरवाल, लालाराम माली (पिपलिया मंडी), संदीप श्रीमाल, पंकज जैन, मनीष जैन, नरेश (शिवम) सहित क्षेत्र के लगभग 150 कृषि आदान विक्रेता मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अनिल सुराना (दलौदा), श्री मनीष माथुर (अनुभव एग्रो) ने एवं आभार श्री अभिषेक मुजावदिया (मल्हारगढ़) ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में सबसे पहले आए तीन विक्रेताओं जिनमें रामनिवास पोरवाल (प्रगति फर्टिलाइजर), मुकेश शर्मा (मालवा एग्रो) पिपलिया मंडी, योगेन्द्र सिंह सोनगरा (आशापुरा एग्रो) मन्दसौर को सम्मानित किया।

कृषक कल्याण कार्यक्रम में कृषि रथों का संचालन

बड़वानी (कृषक जगत)। वर्ष 2026 को कृषि साल के रुप में मनाया जाएगा। इसके अंतर्गत जिले के सभी विकासखंडों में किसानों को खेती की सम सामयिक जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से कृषि रथों को रवाना किया गया। जिला मुख्यालय पर उप संचालक कृषि श्री के. सी. बास्केल ने रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर सहायक संचालक कृषि श्री शांतिलाल पवार, श्री राकेश सिंगारे, श्री विक्रम सिंह रावत सहित अधिकारी मौजूद थे।

कृषक कल्याण कार्यक्रम के तहत सेंधवा विकासखंड के ग्राम कलालदा में कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री भरत पटेल ने कृषकों को सम्बोधित करते हुए जैविक/प्राकृतिक खेती, मृदा परीक्षण, आईपीएम, आईएनएम,फसल विविधीकरण, कृषि विभाग की योजनाओं, पराली प्रबंधन, ई विकास प्रणाली के अंतर्गत ई टोकन उर्वरक वितरण व्यवस्था आदि पर मार्गदर्शन दिया। इस दौरान सरपंच श्री सुमित दुर्गा भी उपस्थित थे।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....

....

ग्राम .... पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....

वि.ख. .... तह. ....

जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....

शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....

ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....

ई-मेल ....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम

कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861

कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org

जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952

रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862

इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864

नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

एग्री क्लीनिक और एग्री बिजनेस पर कार्यशाला

मुरैना (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना पर एग्री क्लीनिक एवं एग्री बिजनेस पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नाबार्ड के डीडीएम श्री आशीष श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुतिकरण कर बताया गया कि यह एक स्वरोजगारन्मुखी योजना है। जिनका उपयोग कृषि स्नातक एवं अन्य स्नातक स्वरोजगार की तरह कर सकते हैं। इस योजना के तहत 45 से 60 दिवस का प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा अपना केन्द्र विकसित कर सकते हैं इस कार्य हेतु नाबार्ड द्वारा ऋण का प्रावधान है। जिसमें युवा बैंक से ऋण प्राप्त कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकते है। कार्यक्रम में सह संचालक अनुसंधान डॉ. संदीप सिंह तोमर द्वारा युवाओं को स्वरोजगार अपनाकर अधिक से अधिक संख्या में इस योजना का लाभ लेने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी.एस. कसाना द्वारा किया गया। कार्यक्रम की उपयोगिता के बारे में डॉ. कसाना द्वारा बताया गया कि इस कार्यशाला के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ग्रामीण युवाओं एवं कृषि स्नातकों को सीधे तौर पर बैंक एवं नाबार्ड से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इस कार्यक्रम द्वारा कृषकों को कृषि स्नातकों एवं कृषक उत्पादक संगठन एवं अन्य उपयुक्त ग्रामीण संस्थाओं को इस योजना के संबंध में जागरूक करना है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से लीड बैंक मैनेजर, मुरैना अन्य बैंकर्स, कृषक उत्पादक संगठन एवं अन्य वैज्ञानिक एवं अधिकारी शामिल हुये।

एग्रीस्टेक का उपयोग अनिवार्य हुआ

बैतूल (कृषक जगत)। भारत सरकार द्वारा विकसित एग्रीस्टेक एक समग्र डिजिटल इकोसिस्टम है, जिसका उद्देश्य किसानों के लिए एक केंद्रीकृत डेटाबेस तैयार करना है। इस प्लेटफार्म के माध्यम से किसानों की पहचान, भूमि अभिलेख, फसल विवरण जैसी महत्वपूर्ण जानकारियाँ एकीकृत की जाती हैं, ताकि उन्हें ऋण, वैज्ञानिक सलाह, गुणवत्तापूर्ण बीज, बाजार तक पहुंच तथा विभिन्न शासकीय योजनाओं का लाभ सरलता से मिल सके। एग्रीस्टेक से कृषि मूल्य श्रृंखला को डिजिटल रूप से सशक्त करने के साथ-साथ कृषक हितैषी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और दक्षता भी सुनिश्चित होगी।

भारत सरकार के एग्रीस्टेक कार्यक्रम को प्रदेश में भी प्रभावी रूप से लागू किया जा रहा है। केंद्र की अपेक्षाओं के अनुरूप फार्मर आईडी निर्माण तथा डिजिटल क्रॉप सर्वे में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। जिले में अब तक 2.65 लाख से अधिक फार्मर आईडी तैयार की जा चुकी हैं।

कृषि विभाग द्वारा प्रमुख कृषक-उन्मुख योजनाओं के हितग्राही घटकों को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराते हुए एग्रीस्टेक से एकीकृत किया जा रहा है, जिससे किसानों को अपने गांव या मोबाइल फोन पर ही योजनाओं की जानकारी मिलेगी और बिना किसी कागजी कार्यवाही के आवेदन की सुविधा उपलब्ध होगी।

इसी क्रम में शासन द्वारा खरीफ 2026 से सभी विभागीय हितग्राही मूलक कृषक-उन्मुख योजनाओं में सहायता/अनुदान के लिए फार्मर आईडी को अनिवार्य करने का निर्णय लिया गया है। इसके अंतर्गत जिले में शत-प्रतिशत पात्र कृषकों की फार्मर आईडी बनाए जाने की कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है, ताकि आगामी खरीफ मौसम से सभी योजनाओं का लाभ समयबद्ध और पारदर्शी रूप से किसानों तक पहुंचाया जा सके।

आत्मा नवाचार में प्राकृतिक खेती प्रमुख: श्री सोलंकी

देवास (कृषक जगत)। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन योजना के तहत परियोजना संचालक आत्मा श्री मथुरा लाल सोलंकी की उपस्थिति में बीआरसी वेरिफिकेशन एवं कृषक जागरूकता अभियान ग्राम डांगरा खेड़ा एवं ग्राम सालखेतिया विकासखंड बागली में सम्पन्न हुआ। वहीं ग्राम कानकुण्ड विकासखंड देवास के किसानों ने प्राकृतिक खेती करने की शपथ ली।

इस दौरान श्री सोलंकी ने आत्मा के तहत प्राकृतिक खेती कार्यक्रमों की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस योजना में शामिल कृषक 1 एकड़ में प्राकृतिक खेती करेंगे। गाय के गोबर, गोमूत्र और प्राकृतिक संसाधनों से जैसे जीवामृत,बीजामृत,घनजीवामृत से खाद की पूर्ति और नीमास्त्र,ब्रह्मास्त्र से कीट नियंत्रण का काम किया जायेगा। इस अवसर पर विकासखंड तकनीकी प्रबंधक देवास श्री रोहित यादव,सहायक तकनीकी प्रबंधक श्री विजेंद्र जयसवाल उपस्थित थे।

डॉ. भट्ट कृषि महाविद्यालय के नए डीन

जबलपुर (कृषक जगत)। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की अनुशंसा पर प्लांट पैथालॉजी के विभागाध्यक्ष एवं आचार्य डॉ. जयंत भट्ट को कृषि महाविद्यालय, जबलपुर के अधिष्ठाता पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। डॉ. भट्ट 1988 में सहायक प्राध्यापक, 1998 में सह प्राध्यापक एवं 2006 से प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। डॉ. भट्ट वर्ष 2021 में प्लांट पैथालॉजी के विभागाध्यक्ष एवं आचार्य बनाए गए। डॉ. भट्ट ने पान परियोजना सहित अन्य परियोजनाओं में सेवाएं प्रदान की हैं। डॉ. भट्ट ने कृषि महाविद्यालय, जबलपुर के एकेडमिक इंचार्ज सहित कॉलेज के अति महत्वपूर्ण कार्यों के दायित्व संपादित किये हैं।

पटवारी एग्रो एजेन्सी

:: वितरक ::

◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि. ◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि. ◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ ◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया ◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.

17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन

आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता

हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन,
मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
TerraGlebe NIMADFRESH

यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन

निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो.** : 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

अरबोइंट का एक्सलरेट सभी फसलों के लिए उपयुक्त

इंदौर (कृषक जगत)। अरबोइंट इंटरनेशनल साल्यूशंस,इंडिया देश की ऐसी कम्पनी है, जिसका उद्देश्य फसल स्वास्थ्य और उत्पादकता को बढ़ाने हेतु अति आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर पर्यावरण सुरक्षा के साथ ही किसानों की ज़रूरतों को पूरा करना है। इसी कड़ी में अरबोइंट की विस्तृत उत्पाद शृंखला का एक ऐसा ही उत्पाद एक्सलरेट (तरल) है, जो एमईटी (माइक्रो एनकेप्सुलेशन टेक्नालॉजी) अर्थात् सुरक्षा कवच तकनीक से निर्मित होकर सभी फसलों के लिए उपयुक्त है।

कंपनी के जोनल मैनेजर श्री महेश त्रिपाठी ने एक्सलरेट की विशेषताओं, लाभ और प्रयोग विधि की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि एक्सलरेट का उपयोग चावल, गेहूं, मक्का जैसी खाद्यान्न फसलों के साथ ही सब्जी वाली फसलों खास तौर से टमाटर की फसल में एकीकृत फसल प्रबंधन के तहत भी किया जा सकता है। इसका उपयोग विशेषकर प्रारम्भिक वानस्पतिक वृद्धि के साथ ही शाखा विकास अवस्था, चरम फूल और फल विकास अवस्था के दौरान करने से बहुत लाभ होता है।

विशेषताएं - यह पौधों के विभिन्न भागों तक आवश्यक पोषक तत्वों को पहुंचाता है, जिससे उनका बेहतर विकास होता है। एमईटी तकनीक पर आधारित यह उत्पाद पौधों को लम्बे समय तक पोषक तत्व उपलब्ध कराता है। यह प्रकाश संश्लेषण की क्रिया को बढ़ाता है, जिसके कारण पौधों में मिट्टी से अधिक मात्रा में पोषक तत्वों का अवशोषण होता है। यह पौधों को जैविक और अजैविक तनावों से भी बचाता है। जिससे फसल स्वस्थ रहती है। एक्सलरेट बेहतर फलोत्पादन और दाना भरने में भी सहयोग करता है, जिससे कृषि उत्पाद की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। उत्पादन में अच्छी वृद्धि होने से फसल के लाभ का अनुपात बढ़ जाता है, जिससे किसानों की आय भी बढ़ जाती है।

महत्व - किसानों के महत्व की दृष्टि से देखें तो एक्सलरेट का उपयोग जल्दी अंकुरण, दमदार पौधा और मजबूत जड़तंत्र को बढ़ावा देता है। यही नहीं यह पौधों को रोगों के प्रति, प्रतिरोधक क्षमता भी प्रदान करता है, जिससे फसल स्वस्थ रहती है और किसानों को भरपूर अधिक गुणवत्तायुक्त पैदावार प्राप्त होती है।

प्रयोग विधि - इसकी 2.0 से 2.5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर की दर से पानी में घोलकर सभी प्रकार की फसलों में उपयोग करने की अनुशंसा की गई है। **अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- 9575895964**

खरगोन की सोलर पावर सहकारी संस्था बनी हरित भविष्य की मशाल

खरगोन (कृषक जगत)। भोपाल के ऐतिहासिक जंबूरी मैदान में कृषक कल्याण वर्ष-2026 के शुभारंभ अवसर पर आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम में खरगोन की सोलर पावर विस्तार सहकारी संस्था ने अपनी सशक्त उपस्थिति से हरित ऊर्जा और किसान सशक्तिकरण की नई इबारत लिखी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास सारंग ने संस्था द्वारा किए जा रहे नवाचारी सौर ऊर्जा प्रयासों की प्रशंसा करते हुए इसे सोलर से आर्थिक एवं पर्यावरण जागरूकता के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में 'गेम-चेंजर मॉडल' बताया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 'सौर ऊर्जा के माध्यम से किसान को आत्मनिर्भर बनाना ही 2026 के विकसित मध्यप्रदेश की नींव है।' वहीं मंत्री श्री विश्वास सारंग ने संस्था को सहकारिता और नवाचार का आदर्श उदाहरण बताते हुए इसके विस्तार के लिए हर संभव सहयोग का भरोसा दिया। कार्यक्रम में किसानों, सहकारी प्रतिनिधियों एवं ऊर्जा विशेषज्ञों की मौजूदगी ने स्पष्ट कर दिया कि कृषक कल्याण वर्ष 2026 केवल एक कैलेंडर नहीं, बल्कि गांव-गांव तक उजाले की यात्रा है। सोलर पावर विस्तार सहकारी संस्था इस यात्रा की अग्रिम पंक्ति में खड़ी होकर हर खेत तक सूरज की ताकत पहुंचाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है।

सोलर पावर विस्तार सहकारी संस्था के सीईओ श्री हिमांशु कुशवाह ने बताया कि हमारे द्वारा प्रस्तुत सोलर पंप, कृषि-ऊर्जा समाधान और ग्रामीण बिजली आत्मनिर्भरता के मॉडल ने यह सिद्ध कर दिया कि आज का किसान केवल अन्नदाता नहीं, ऊर्जा-दाता भी बन रहा है। यह पहल खेती की लागत घटाने, सिंचाई को सशक्त करने और पर्यावरण संरक्षण के त्रिसूत्रीय लक्ष्य को साध रही है।

कोदो-कुटकी खरीदी की अंतिम तिथि 31 जनवरी तक

छिन्दावाड़ा (कृषक जगत)। राज्य सरकार की रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना अंतर्गत जिले में कोदो एवं कुटकी का उपार्जन किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत श्रीअन्न प्रोत्साहन कंसोर्टियम ऑफ फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लि. द्वारा उपार्जन की व्यवस्था की गई है। जिले में उपार्जन हेतु MPWLC (2336005002) पिपरिया रोड तामिया को अधिकृत उपार्जन केन्द्र बनाया गया है, जहां 15 जनवरी 2026 तक कोदो एवं कुटकी का उपार्जन किया जाना था, कोदो-कुटकी उत्पादक कृषकों के हितों को दृष्टिगत रखते हुए अब उपार्जन अवधि 31 जनवरी 2026 तक बढ़ाई गई है।

किसानों की सुविधा के लिए श्री प्रमोद सिंह उट्टी, अनुविभागीय कृषि अधिकारी परासिया (मो. 8770880138) को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही श्री योगेश उइके, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी तामिया (मो. 7828476474) एवं श्री विनोद टांडेकर, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी हर्रई (मो. 8462830470) को सहायक नोडल अधिकारी बनाया गया है। उपार्जन केन्द्र प्रभारी के रूप में श्री सुदेश शर्मा, सतपुड़ा महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लि. (मो. 9983690591) तथा कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री प्रिंस सूर्यवंशी (मो. 7805975161) से भी किसान आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उप संचालक कृषि श्री सिंह ने जिले के कोदो एवं कुटकी उत्पादक किसानों से पुन: अपील की है कि जिन किसानों ने उपार्जन हेतु पंजीयन कराया है, वे बढ़ी हुई अवधि का लाभ अवश्य उठाएं।

मिलावटी दूध तैयार करने वाली डेयरी को किया सील

भिंड (कृषक जगत)। भिंड में मिलावटी दूध तैयार करने वाली डेयरी को सील करने का मामला सामने आया है। कलेक्टर भिण्ड के निर्देशन में एवं अभिहित अधिकारी के मार्गदर्शन में खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुश्री रेखा सोनी, श्रीमती रीना बंसल एवं श्रीमती किरन सेंगर ने ग्राम -गहेली, तहसील- मेहगांव स्थित मुकेश राठौर की डेयरी पर छापामार कार्यवाही कर मौके से मिलावटी दूध तैयार करने वाली डेयरी को सील किया गया।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने आर.एम. केमिकल, लिक्विड ग्लूकोज, रिफाइंड सोयाबीन ऑयल को जब्त कर दूध, आर.एम. केमिकल, लिक्विड ग्लूकोज, रिफाइंड सोयाबीन ऑयल के नमूने जांच के लिये गये। जिसमें आर.एम. केमिकल 34 किग्रा., लिक्विड ग्लूकोज 12 किग्रा., रिफाइंड सोयाबीन ऑयल 24 किग्रा. एवं दूध 600 लीटर मौके पर संग्रहित पाया गया।

डेयरी संचालक मुकेश राठौर मौके पर खाद्य लाइसेंस भी नहीं दिखा सके, डेयरी पर खाद्य लाइसेंस नहीं पाये जाने एवं डेयरी पर मिलावटी दूध तैयार करने के लिए पाये गये अपद्रव्य के आधार पर डेयरी परिसर को सील किया गया।

पांढुर्ना में भी मिलेगी 5 रूपए में कृषि पंप संयोजन की सुविधा

किसानों की मांग पोल/ट्रांसफार्मर का खर्च सरकार वहन करे

(उमेश खोड़े, कृषक जगत, पांढुर्ना)। अब पांढुर्ना में भी 5 रूपए में 5 हॉर्स पावर तक के कृषि पंप संयोजन की सुविधा किसानों को मिलने लगेगी। मप्र पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी लि., पांढुर्ना के कार्यपालन अभियंता के अनुसार इस संबंध में अधिसूचना जारी हो गई है। गाइड लाइन प्राप्त होते ही यह प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जाएगी। दूसरी ओर किसानों का कहना है कि पोल/ट्रांसफार्मर का खर्च उठाने में वे असमर्थ है, अत: उनके खेत तक लगने वाले पोल व अन्य खर्च सरकार उठाए, तभी 5 रूपए में 5 हॉर्स पावर तक के कनेक्शन की यह सुविधा सार्थक होगी।

श्री वरुण सारस्वत, कार्यपालन अभियंता, मप्र पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कं. लि., पांढुर्ना ने कृषक जगत को बताया कि पहले पांढुर्ना में यह योजना लागू नहीं थी, लेकिन अब यहां के लिए भी 5 रूपए में 5 हॉर्स पावर तक के कृषि पंप संयोजन की अधिसूचना जारी हो गई है। कुछ दिन में गाइड लाइन भी आ जाएगी, उसके बाद इसकी प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। श्री सारस्वत ने स्पष्ट किया कि यह सुविधा उन मामलों में दी जाएगी, जहां विद्युत लाइन विस्तार की आवश्यकता नहीं होगी, अन्यथा अधोसंरचना के जो भी अतिरिक्त कार्य होंगे, जैसे नया ट्रांसफार्मर या पोल लगाना इन सबका खर्च उपभोक्ता को ही वहन करना होगा। इस योजना में कनेक्शन चार्ज जो पहले लगते थे, वह अब कम हो गए हैं।

खर्च सरकार वहन करे - 5 रूपए में 5 हॉर्स पावर तक के कृषि पंप संयोजन की सुविधा लेने के इच्छुक किसानों ने कृषक जगत से चर्चा की। ग्राम भंडारगोंदी के श्री नीलेश कलसकर के यहां दो पोल, धावड़ीखापा के श्री मंसाराम खोड़े के यहाँ तीन पोल,देवखापा के श्री रवि हिवरे और कलावती बेलखड़े के यहाँ पांच पोल लगेंगे। किसानों ने बताया कि इस योजना में पंजीयन शुल्क के ढाई हज़ार कम हुए हैं। जबकि सुरक्षा निधि (1500 रु) को पहले बिल में जोड़ा जाएगा, जो किसानों के लिए फौरी राहत होगी, जबकि एक पोल की लागत करीब 22 हज़ार रु तक आती है। यदि इच्छुक किसानों की ज़रूरत के हिसाब से इसकी गणना की जाए तो यह राशि हज़ारों में पहुंच जाएगी। ट्रांसफार्मर तो दो लाख रु तक के आते हैं। इतनी बड़ी राशि किसान वहन करने में सक्षम नहीं है। किसानों का कहना है कि पोल/ट्रांसफार्मर आदि का खर्च सरकार को वहन करना चाहिए, तभी 5 रूपए में 5 हॉर्स पावर तक के कनेक्शन की यह सुविधा सार्थक होगी, अन्यथा यह किसानों के लिए छलावा ही साबित होगी।

उल्लेखनीय है कि 5 रूपए में 5 हॉर्स पावर के कृषि कनेक्शन को लेकर गत नवंबर माह में भारतीय किसान संघ, पांढुर्ना द्वारा मुख्यमंत्री को सौंपे गए ज्ञापन की खबर को कृषक जगत में प्रमुखता से उठाया गया था। इस मांग की समाधान की प्रक्रिया शुरू होने पर किसानों और भाकिसं, पांढुर्ना ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

कृषक जगत के फेसबुक समर्थक एक लाख के पार

भोपाल (कृषक जगत)। लगातार 80 वर्षों से देश के किसानों को कृषि संबंधी समाचार, सामयिक सलाह, अद्यतन जानकारी और उनकी समस्याओं को प्रमुखता से उठाने वाला राष्ट्रीय कृषि समाचार पत्र कृषक जगत ने प्रिंट मीडिया के साथ-साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि कृषक जगत के आधिकारिक फेसबुक पेज पर समर्थकों की संख्या एक लाख के पार हो गई है, जो कृषक जगत के प्रति पाठकों, किसानों और दर्शकों के स्नेह व विश्वास का प्रतीक है।

उल्लेखनीय है कि 1946 में स्थापित कृषक जगत का मूल उद्देश्य किसानों का हित रहा है। यही कारण है कि पिछले आठ दशकों से कृषक जगत किसानों की आवाज बना हुआ है। अतीत से लेकर वर्तमान तक कृषक जगत ने किसानों को कृषि समाचार, सामयिक सलाह, मौसम संबंधी जानकारी तथा कृषि से जुड़ी अद्यतन सूचनाएं उपलब्ध कराई हैं। इसमें कृषि वैज्ञानिकों के लेख, शोध-आधारित सामग्री, त्वरित मार्गदर्शन और नवीनतम जानकारियां शामिल हैं, वहीं किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु एक प्रभावी सेतु के रूप में भी कृषक जगत ने निरंतर भूमिका निभाई है।

समय के साथ तालमेल बिठाते हुए कृषक जगत ने न केवल कृषक जगत पोर्टल की शुरुआत की, बल्कि फेसबुक पर आधिकारिक पेज के माध्यम से सोशल मीडिया पर भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की, ताकि कृषि से संबंधित सूचनाओं का त्वरित और व्यापक प्रेषण संभव हो सके। फेसबुक पेज पर समर्थकों की संख्या का एक लाख के पार पहुंचना इस बात का प्रमाण है कि किसानों और आमजन ने कृषक जगत की इस डिजिटल पहल को दिल से स्वीकार किया है।

फेसबुक लाइव के माध्यम से कृषक जगत किसान सत्र के अंतर्गत अब तक 100 से अधिक वेबिनार का सफल प्रसारण किया गया, जिन्हें लाखों लोगों ने देखा। इन सत्रों के दौरान कमेंट बॉक्स के जरिए किसानों के प्रश्नों का विषय-विशेषज्ञों द्वारा समाधान प्रस्तुत किया गया। किसान सत्र में आयोजित कृषि ज्ञान प्रतियोगिताओं में सैकड़ों दर्शकों ने भाग लेकर पुरस्कार भी जीते। साथ ही, इस मंच के माध्यम से कई प्रगतिशील किसानों ने सरकारी योजनाओं पर अपने अनुभव, प्रतिक्रियाएं और उपयोगी सुझाव साझा किए। इस प्रकार यह माध्यम केवल सूचना और ज्ञान का स्रोत ही नहीं रहा, बल्कि सरकारी तंत्र और किसानों के बीच इंटरएक्टिव संवाद का सशक्त मंच भी बना।

विदित है कि कृषक जगत का प्रकाशन संस्थापक द्वय श्री माणिकचंद्र बोंद्रिया और श्री सुरेश चंद्र गंगराड़े के दूरदर्शी नेतृत्व में 1946 में नागपुर से आरंभ हुआ था। मध्यप्रदेश की स्थापना के बाद 1957 में भोपाल से इसका प्रकाशन शुरू किया गया। कृषि को पूर्णतः समर्पित इस समाचार पत्र की बढ़ती लोकप्रियता के चलते 25 वर्ष पूर्व जयपुर से राजस्थान संस्करण और 23 वर्ष पूर्व रायपुर से छत्तीसगढ़ संस्करण का साप्ताहिक प्रकाशन आरंभ किया गया, जिन्हें सराहनीय प्रतिसाद मिला और आज भी दोनों संस्करण निरंतर प्रकाशित हो रहे हैं।

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए कृषक जगत को आईसीएआर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है, जो इसे देश का एकमात्र सम्मानित कृषि समाचार पत्र बनाता है। विकास की इस कड़ी में, वैश्विक कृषि परिदृश्य और कॉर्पोरेट जगत की मांग को देखते हुए दो वर्ष पूर्व अंग्रेजी मासिक पत्रिका 'ग्लोबल एग्रीकल्चर' का प्रकाशन भी शुरू किया गया, जो अल्पकाल में ही देश-प्रदेश के साथ-साथ विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है।

इस उपलब्धि के अवसर पर कृषक जगत परिवार सभी दर्शकों, पाठकों, ग्राहकों, विज्ञापनदाताओं तथा दशकों से जुड़े सभी नाम-अनाम सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता है। आपका अटूट विश्वास और स्नेह हमें भविष्य में भी नई पहलें, सुविधाएं और किसान-हितैषी पत्रकारिता को और सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करता रहेगा। पुनः हार्दिक आभार एवं धन्यवाद!

● सचिन बोन्द्रिया, संचालक
कृषक जगत

कृषक जगत
डायरी - 2026
बुकिंग प्रारंभ
नए आकार, नए कलेवर में
(एग्जीक्यूटिव डायरी)

कृषि विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए संदर्भ ग्रंथ
वर्ष भर कृषि सेवाओं और उत्पादों के
प्रचार हेतु सर्वोत्तम माध्यम

प्रमुख आकर्षण
कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी
प्रमुख फसलों की नई किस्मों के साथ सम्पूर्ण जानकारी
कृषि विभाग के महत्वपूर्ण अधिकारियों के नाम, फोन नंबर
कृषकों के लिए सरकारी योजनाओं की उपयोगी जानकारी
कृषि इनपुट से संबंधित नए उत्पादों की जानकारी
बागवानी, पशु चिकित्सा, कृषि यंत्र की संपूर्ण जानकारी
पंचांग, कैलेण्डर, त्यौहारों, लोक मेलों की जानकारी

कृषि आदान-यंत्र निर्माताओं, विक्रेताओं, ट्रैक्टर डीलरों की नववर्ष उपहार के लिए पहली पसंद

कृषक जगत के नियमित सदस्यों के लिए डायरी फ्री*

25 लाख पाठकों में सर्वाधिक लोकप्रिय
अपना उपहार सुनिश्चित पाने के लिये संपर्क करें
6262166222
वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹ 600
*नियम व शर्तें लागू, डायरी 2026 मूल्य रु 200/-

मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान कृषि पर विशेष जानकारी
विज्ञापन एवं डायरी खरीदी के लिए संपर्क करें
• इंदौर - सचिन बोन्द्रिया : 9826021837
• भोपाल - अजय बोन्द्रिया : 9826255861
• इंदौर कार्यालय : 9826024864
• रायपुर - प्रेमप्रकाश सुल्लेरे : 9826255862
• नई दिल्ली व जयपुर - निमिष गंगराड़े : 7387422952
• ई-मेल : info@krishakjagat.org
• वेबसाइट : www.krishakjagat.org